mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-68 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

10 मार्च 2025 सोमवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

रोहित शर्मा के...
@ पेज 7

पुरी में समुद्र किनारे बन रहा आलीशान आध्यात्मिक रिसॉर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। ओडिशा के पुरी में जगन्नाथ मंदिर के एक पुजारी आलीशान रिसॉर्ट बना रहे हैं। कोलकाता में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में उन्होंने बताया कि वह पवित्र शहर में आध्यात्मिकता पर केंद्रित 300

● लागत 200 करोड़, शुद्ध शाकाहारी खाना-स्पा की सुविधा भी मिलेगी

कमरों वाला एक आलीशान रिसॉर्ट बना रहे हैं। पुजारी ने रविवार को कहा कि समुद्र तट पर बनने वाला यह प्रोजेक्ट शुद्ध शाकाहारी और शराब रहित होगा, जिसका उद्देश्य तीर्थयात्रियों और आधुनिक सुख-सुविधाओं के साथ आध्यात्मिक शांति चाहने वाले यात्रियों को ÷सात्विक÷ अनुभव प्रदान करना है।

जगन्नाथ मंदिर के पुजारी की टीम के एक अधिकारी ने कहा कि इस प्रोजेक्ट का मौजूदा मूल्यांकन 200 करोड़ रुपये है। सेवायत दैतापति भवानी दास ने कहा, ÷पुरी सिर्फ एक गंतव्य नहीं है। यह एक पवित्र निवास है, जहां दिव्यता सागर से मिलती है। रिसॉर्ट आध्यात्मिक शांति और आलीशान आतिथ्य का मिश्रण प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि जगन्नाथम परियोजना की निर्माण लागत भूमि को छोड़कर 110 करोड़ रुपये होने का अनुमान है। मेरिडियन मिस्ट होटल एंड रिसॉर्ट के तहत यह परियोजना पुरी-कोणार्क समुद्री मार्ग के किनारे सात एकड़ के समुद्र तट पर बनाई जा रही है, जो पुरी में जगन्नाथ मंदिर से लगभग 8 किलोमीटर दूर है।

पुजारी ने कहा, ÷जमीन मेरी है और जगन्नाथ मंदिर के साथ हितों का कोई टकराव नहीं है।÷ दास ने कहा कि 2026 की रथ यात्रा से पहले 14-16 महीनों में खुलने वाले इस रिसॉर्ट से पुरी में आध्यात्मिक पर्यटन को फिर से परिभाषित करने की उम्मीद है, जो तीर्थयात्रियों और उच्च श्रेणी के यात्रियों दोनों को आकर्षित करेगा। दास और उनके परिवार के पास रिसॉर्ट का 100 प्रतिशत स्वामित्व है, लेकिन वे परियोजना के सदस्यता कार्यक्रम की प्रतिक्रिया के आधार पर अपनी हिस्सेदारी कम करने के लिए तैयार हैं।

सदस्यता की कीमत 3.5 लाख रुपये, 5 लाख रुपये और 7 लाख रुपये है, जो सदस्यों को पांच साल तक हर महीने तीन रात ठहरने की सुविधा प्रदान करती है, जो इसे पुरी में लक्जरी रिसॉर्ट का एक किफायती विकल्प बनाती है। रिसॉर्ट अपने शुरुआती चरण में 5,000 सदस्यों को जोड़ने का लक्ष्य रखता है। रिसॉर्ट में स्टूडियो और डीलक्स कॉटेज, एक स्पा, एक एम्फीथिएटर, एक जॉगिंग ट्रैक, एक टेनिस कोर्ट और समर्पित स्वास्थ्य स्थान होंगे।

संक्षिप्त समाचार

कैलिफोर्निया में फिर से हिंदू मंदिर में की गई तोड़फोड़

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। अमेरिका के कैलिफोर्निया में चिनो हिल्स स्थित बोचासनवासी अक्षर पुरुषोत्तम स्वामीनारायण संस्था (बीएपीएस) के मंदिर में अज्ञात लोगों ने तोड़फोड़ की। श्री स्वामीनारायण मंदिर में हुई तोड़फोड़ के बारे में 'बीएपीएस पब्लिक अफेयर्स' ने सोशल मीडिया प्लेटफार्म 'एक्स' पर एक पोस्ट कर जानकारी दी। पोस्ट में कहा, ''एक और मंदिर अपवित्रत किया गया। इस बार यह घटना कैलिफोर्निया में चीनो हिल्स में हुई। हिंदू समुदाय नफरत के खिलाफ दृढ़ता से खड़ा है। चीनो हिल्स और दक्षिणी कैलिफोर्निया में समुदाय एक साथ है और हम कभी नफरत को जड़ नहीं जमाने देंगे।'' इस पोस्ट में घटना का ब्योरा दिए बिना कहा गया, ''हमारी साझा मानवता और आस्था यह सुनिश्चित करेगी कि शांति एवं करुणा कायम रहे।'' उत्तरी अमेरिका में हिंदू धर्म पर समझ को बेहतर बनाने की दिशा में काम करने वाले संगठन 'द कोएलिशन ऑफ हिंदूज ऑफ नॉर्थ अमेरिका' ने पूर्व में हुई इस प्रकार की घटनाओं की ओर ध्यान दिलाया और गहन जांच की मांग की। संगठन ने 'एक्स' पर अपने पोस्ट में कहा, ''एक और हिंदू मंदिर में तोड़फोड़ की गई- इस बार कैलिफोर्निया के चीनो हिल्स में प्रतिष्ठित बीएपीएस मंदिर में। अब भी मीडिया और शिक्षाविद इस बात पर जोर देंगे कि हिंदुओं के प्रति कोई नफरत नहीं है और 'हिंदूफोबिया' सिर्फ हमारी कल्पना की उपज है।'' पोस्ट में आगे कहा गया, ''कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यह तब हुआ जब लॉस एंजिलिस में तथाकथित 'खालिस्तान जनमत संग्रह' का दिन नजदीक आ रहा है।'' संगठन ने 10 मंदिरों के नाम सार्वजनिक किए जिनमें पिछले कुछ वर्षों में तोड़फोड़ की गई या उन्हें अपवित्र करने की घटनाएं हुई हैं। सितंबर में कैलिफोर्निया के सैक्रामेंटो में बीएपीएस हिन्दू मंदिर को अपवित्र कर दिया गया तथा दीवार पर नारे लिखकर कहा गया 'हिन्दुओं वापस जाओ!'

डोनाल्ड ट्रंप के कड़े फैसले से परेशान अफगानी छात्राएं

क्रेमलिन (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा विदेशी सहायता कार्यक्रमों में व्यापक कटौती करने के बाद 80 से अधिक अफगान महिलाओं को जो तालिबान से बचकर ओमान में हायर एजुकेशन प्राप्त कर रही थीं, अब अफगानिस्तान लौटने का आदेश दिया गया है। इन महिलाओं की स्कॉलरशिप अमेरिकी एजेंसी यूएसएआईडी द्वारा वित्तपोषित की गई थी, जो अब बंद होने के कगार पर है। ट्रंप और उनके सहयोगी एलन मस्क ने 90 प्रतिशत से अधिक विदेशी सहायता अनुबंधों को समाप्त करने का फैसला लिया है। यूएसएआईडी द्वारा वित्तपोषित ये

स्कॉलरशिप्स जनवरी में अमेरिकी राष्ट्रपति के पदभार ग्रहण करते ही अचानक समाप्त कर दी गईं, जब ट्रंप ने विदेशी सहायता पर रोक लगा दी। रिपोर्ट के मुताबिक, एक छात्रा ने मीडिया से कहा, ÷यह दिल तोड़ने वाला था। हर कोई हैरान था और रो रहा था। हमें बताया गया कि हमें दो हफ्तों के अंदर वापस भेज दिया जाएगा।÷ लगभग चार साल पहले अफगानिस्तान की सत्ता पर कब्जा करने वाले तालिबान ने महिलाओं पर सख्त पाबंदियां लगाई हैं, जिनमें विश्वविद्यालयों में पढ़ाई पर भी रोक शामिल है। ट्रंप के विदेशी सहायता फंडिंग फ्रीज को अमेरिका और दुनिया भर में कई कानूनी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। कई सहायता कार्यक्रम पहले ही इसके प्रभावों को महसूस कर रहे हैं। इनमें वे कार्यक्रम भी शामिल हैं जो कमजोर देशों में स्वास्थ्य प्रणालियों, पोषण कार्यक्रमों और भुखमरी से निपटने के लिए अहम हैं। ओमान में अध्ययन कर रही इन अफगान महिलाओं ने कहा कि वे अपनी मातृभूमि लौटने की तैयारी कर रही हैं, लेकिन उन्होंने अंतरराष्ट्रीय समुदाय से तत्काल हस्तक्षेप की अपील की है।

शिक्षक को बीमार होने पर भी नहीं मिली छुट्टी, सलाइन चढ़वाकर जाना पड़ा स्कूल

बलांगीर (एजेंसी)। ओडिशा के बलांगीर जिले से एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है। जहां एक शिक्षक को बीमार होने के बावजूद जबरन स्कूल आना पड़ा। शिक्षक ने आरोप लगाया कि उन्हें छुट्टी देने से इनकार कर दिया गया, जिसके कारण उन्हें सलाइन चढ़वाकर स्कूल जाना पड़ा। भैंसा आदर्श विद्यालय में गणित के शिक्षक प्रकाश भोई ने अपने दादा के अंतिम संस्कार में शामिल होने के बाद तबीयत खराब होने के कारण छुट्टी के लिए आवेदन किया था। लेकिन स्कूल की प्रभारी प्रिंसिपल बिजयलक्ष्मी प्रधान ने उनकी छुट्टी को मंजूरी नहीं दी और उन्हें जिला शिक्षा अधिकारी और डीपीसी के कार्यालय जाने का निर्देश दिया। भोई ने बताया कि जब वे डीपीसी कार्यालय पहुंचे, तो वहां दोपहर 12 बजे के आसपास उनकी तबीयत और बिगड़ गई। उन्होंने अस्पताल जाने की अनुमति मांगी, लेकिन प्रिंसिपल ने उनकी सेहत की चिंता किए बिना पूछा कि क्या वे दोपहर 2 बजे तक वापस आ सकते हैं। भोई ने बताया, सरकारी अस्पताल दूर था, और मेरे पास निजी अस्पताल जाने के लिए पैसे नहीं थे, न ही मेरा यूपीआई काम कर रहा था। इसलिए बिना इलाज कराए मैं वापस कार्यालय लौट आया और देर शाम तक काम किया। बार-बार अनुरोध करने के बावजूद, मैडम ने मुझे जाने की अनुमति नहीं दी। रात में दवा लेने के बाद भी भोई की हालत ठीक नहीं हुई। उन्होंने फिर से प्रिंसिपल से छुट्टी की मांग की, लेकिन उन्होंने मना कर दिया और कहा कि परीक्षा की तैयारी के लिए स्कूल आना जरूरी है। मजबूरी में, उन्होंने डॉक्टर से सलाइन चढ़वाकर स्कूल जाने का फैसला किया, क्योंकि उनकी तबीयत बहुत खराब थी। जब भोई स्कूल पहुंचे, तो उनके सहकर्मियों ने उनकी हालत देखकर तुरंत उन्हें अस्पताल भेज दिया।

मुंबई के नागपाड़ा इलाके की घटना

अंडर कंस्ट्रक्शन बिल्डिंग के वॉटर टैंक में दम घुटने से 4 मजदूरों की मौत

नागपाड़ा (एजेंसी)। मुंबई के नागपाड़ा इलाके में एक अंडर कंस्ट्रक्शन बिल्डिंग के वॉटर टैंक में दम घुटने की वजह से 4 मजदूरों की मौत हो गई। रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद सभी मजदूरों को जेजे अस्पताल लाया गया। अस्पताल में डॉक्टरों ने चार मजदूरों को मृत घोषित कर दिया। जे जे अस्पताल में मजदूरों को देखने वाले डॉक्टर ने बताया कि दम घुटने से पांच लोग बेहोश हुए थे, जिन्हें अस्पताल लाया गया। इनमें से चार लोगों को मृत घोषित कर दिया गया है। शुरुआत में पांच मजदूरों की मौत की जानकारी सामने आई थी। हालांकि, बाद में मुंबई पुलिस ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि चार मजदूरों की मौत हुई है और पांचवे मजदूर की तबीयत ठीक है।

मुंबई पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि आज सुबह करीब 11-11.30 बजे, चार व्यक्ति/मजदूर दम घुटने के कारण मृत पाए गए। ये सभी लोग जेजे मार्ग पुलिस थाने के अंतर्गत मस्तान तालाब के

पास, डिमटीमकर रोड पर, बिस्मिल्लाह स्पेस नामक एक निर्माणाधीन इमारत में किसी काम के लिए भूमिगत पानी की टंकी में घुसे थे। 5वां व्यक्ति ठीक है, उसे जेजे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। आगे की जांच की जा रही है।

एक दमकल अधिकारी ने बताया कि पांच मजदूर पानी की टंकी साफ करने के लिए उसमें घुसे थे, लेकिन काम करते समय वे अंदर ही बेहोश हो गए। निर्माण स्थल पर मौजूद अन्य लोगों ने दमकल विभाग को सूचना दी, जिसने पांचों लोगों को रेस्क्यू किया और उन्हें सरकारी जेजे अस्पताल पहुंचाया। एक अधिकारी ने बताया कि हालांकि, डॉक्टरों ने इनमें से चार लोगों को मृत घोषित कर दिया। एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि बृहन्मुंबई नगर निगम और स्थानीय पुलिस के अधिकारी मौके पर पहुंच गए हैं और जांच जारी है।

सुहागरात पर दूल्हा-दुल्हन की मौत, सुबह कमरे से मिली लाश

अयोध्या (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के अयोध्या से एक सनसनीखेज घटना सामने आई है। एक परिवार में उस समय खुशियां मातम में बदल गई जब सुहागरात पर ही दूल्हा और दुल्हन दोनों की मौत हो गई। 7 मार्च को शादी थी। 8 मार्च को दुल्हन विदा होकर ससुराल आई और सुहागरात पर ही दोनों की मौत हो गई।घर पूरा सजा हुआ था। परिवार के लोग प्रीतिभोज की तैयारी कर रहे थे, लेकिन सुबह जब 7:00 बजे दूल्हा-दुल्हन का दरवाजा नहीं खुला, तो परिजनों को शक हुआ और दरवाजा तोड़कर देखा तो सबके होश उड़ गए। दुल्हन बिस्तर पर मृत पड़ी थी, तो दूल्हा छत के हुक से लटका हुआ था। आनन-फानन में पुलिस और लड़की के घरवालों को सूचना दी गई। शादी के ठीक अगले ही दिन नवविवाहित जोड़े की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। दूल्हा प्रदीप का शव छत के हुक से लटका मिला, जबकि दुल्हन का शव बेड पर पड़ा था।

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की बिगड़ी तबीयत, एम्स दिल्ली में एडमिट

प्रधानमंत्री मोदी ने उपराष्ट्रपति के स्वास्थ्य की जानकारी ली

नई दिल्ली (एजेंसी)। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ को रविवार तड़के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान , दिल्ली के कार्डियक विभाग में भर्ती किया गया। अस्पताल के सूत्रों के अनुसार, उनकी स्थिति स्थिर है और उन्हें निगरानी में रखा गया है। उपराष्ट्रपति को सीने में दर्द के बाद एम्स में भर्ती कराया गया। डॉक्टर के अनुसार, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ को बेचैनी और सीने में दर्द होने के बाद रविवार तड़के करीब 2 बजे एम्स लाया गया था। एम्स कार्डियोलॉजी डिपार्टमेंट के हेड डॉ. राजीव नारंग की देख-रेख में उपराष्ट्रपति का इलाज चल रहा है। उन्हें एम्स के क्रिटिकल केयर यूनिट में रखा गया है। उनकी तबीयत को ध्यान में रखते हुए चेकअप और टेस्ट हो रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने उपराष्ट्रपति के स्वास्थ्य की जानकारी ली। उन्होंने कहा, ÷मैं एम्स गया और उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ जी के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली। मैं उनके अच्छे स्वास्थ्य और शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं।

बतादें कि जगदीप धनखड़ भारत के वर्तमान उपराष्ट्रपति हैं। उन्होंने 11 अगस्त 2022 को भारत के 14वें उपराष्ट्रपति के रूप में शपथ ली। उनका जन्म 18 जुलाई 1951 को राजस्थान के कालीबंगा,

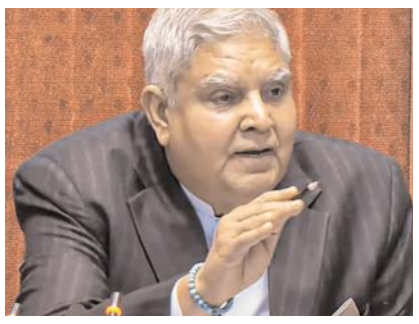

हनुमानगढ़ जिले में हुआ था। वे भारतीय जनता पार्टी से जुड़े हुए हैं और इससे पहले पश्चिम बंगाल के राज्यपाल भी रह चुके हैं उपराष्ट्रपति धनखड़ ने अपनी शिक्षा पंजाब विश्वविद्यालय से प्राप्त की और बाद में कानून की डिग्री हासिल की। वे एक वकील और समाजसेवी भी हैं। इसके अलावा, वे कई वर्षों तक भारतीय संसद के सदस्य भी रहे हैं।

जगदीप धनखड़ ने अपने राजनीतिक सफर में जनता दल, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और भारतीय जनता पार्टी जैसी विभिन्न पार्टियों में अहम भूमिकाएं निभाई।

'इस अंजुमन में आपको आना है बार-बार'

पीएम मोदी को लेकर अखिलेश यादव ने कहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। सूफी संगीत समारोह जहान-ए-खुसरो के 25वीं वर्षगांठ पर आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शरीक हुए। इसका आयोजन देश की राजधानी दिल्ली के सुंदर नर्सरी में किया गया। प्रधानमंत्री मोदी के इस कार्यक्रम में शरीक होने पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने तंज कसा है। उन्होंने अपने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर कार्यक्रम की एक क्लिप शेयर करते हुए लिखा, इस अंजुमन में आपको आना है बार-बार, अब नफरतों को दिल से निकाल दीजिए।

इस कार्यक्रम में अपने संबोधन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, ÷आज जहान-ए-खुसरो में आकर मन खुश होना स्वभाविक है। जहान-ए-खुसरो के आयोजन में एक अलग खुशबू है। ये खुशबू हिंदुस्तान की मिट्टी की है। वो हिंदुस्तान जिसकी तुलना हजरत अमीर खुसरो ने जन्नत से की थी। हमारा हिंदुस्तान जन्नत का वो बगीचा है, जहां तहजीब का हरा रंग

फला-फूला है। सूफी परंपरा ने ना केवल इंसान की रूहानी दूरियों को कम किया है, बल्कि दुनियावी दूरियों को कम किया। रूमी ने कहा था कि शब्दों को ऊंचाई दे आवाज को नहीं, क्योंकि फूल बारिश में पैदा होते हैं, तूफान में नहीं।

प्रधानमंत्री ने इस मौके पर देशवासियों को रमजान की मुबारकबाद भी दी। उन्होंने कहा कि किसी भी देश की सभ्यता, उसकी तहजीब को स्वर उसके गीत-संगीत से मिलते हैं और उसकी अभिव्यक्ति कला से होती है। उन्होंने कहा, ÷भारत में सूफी परंपरा ने अपनी एक अलग पहचान बनाई। सूफी संतों ने खुद को मस्जिद और खानकाहों तक सीमित नहीं रखा है। उन्होंने पवित्र कुरान के हर्फ पढ़े तो वेदों के शब्द भी सुने, उन्होंने अजान की सदा में भक्ति के गीतों की मिठास को जोड़ा।

बरसाने की गोपियों ने नन्दगांव के हुरियारों पर खूब बरसाए लट्ठ

देश-दुनिया के कोने-कोने से आए श्रद्धालु

मथुरा (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के बरसाना में लट्ठमार होली की धूम मची रही। गोपियों ने शनिवार को नंदगांव के हुरियारों पर जमकर लट्ठ बरसाए। बरसाने की होली में शामिल हुए श्रद्धालुओं ने कहा, ÷बरसाना में एक बार फिर द्वापर युग की वह होली साक्षात होती नजर आई, जो कभी पांच हजार वर्ष पूर्व श्रीकृष्ण और राधा के बीच खेली गई थी। ऐसे में देश-दुनिया के कोने-कोने से आए हजारों-लाखों श्रद्धालु इस होली के माध्यम से राधा और श्रीकृष्ण के पवित्र प्रेम से रूबरू हुए। गलियों में उतरीं बरसाना की हुरियारिनों ने कृष्ण सखा ग्वाल-बालों के रूप में नन्दगांव से होली खेलने आए हुरियारों पर जमकर लट्ठ बरसाए। बरसाना की रंगीली गली से लेकर समूचे बाजार में गुलाल और टेसू के रंगों की बौछार हुई और चारों ओर बस रंग ही रंग नजर आ रहा था। लट्ठमार होली यह संदेश देती है कि भारत भूमि पर

तो युगों-युगों से नारी अपनी शक्ति को इसी प्रकार सिद्ध करती चली आ रही है।

इस होली की शुरुआत एक दिन पूर्व बरसाना के राधारानी मंदिर में नन्दगांव से आई उस सखी का लड्डुओं से स्वागत करने के साथ हो जाती है, जो बरसाना वालों को होली खेलने का न्यौता देने पहुंचती है। नन्दगांव के हुरियार पहले बरसाना कस्बे के बाहर स्थित प्रिया कुण्ड पर पहुंचते हैं। जहां उनका स्वागत ठण्डाई और भिन्न-भिन्न प्रकार की मिठाईयों से किया जाता है। इसके बाद हुरियारे कुर्ता-धोती पहन, कमर में रंगों की पोटली और सिर पर साफा बांध, हाथों में ढाल लिए राधारानी के मंदिर पहुंच जाते हैं।

इसी प्रकार बरसाना की हुरियारिनें भी सोलह श्रृंगार के साथ, हाथों में लट्ठ लिए मंदिर से होकर नीचे उतरती चली आती हैं। ऐसे में जब ग्वाल-बालों को रूप धरे हुरियारे उनके साथ चुहलबाजी कर उन्हें उकसाते हैं तो वे तरह-तरह की गालियां सुनाते हुए उन पर लट्ठ बरसाने लगती हैं। होली के मीठे-मीठे पदों के बीच लाठियों की मार से पूरा बरसाना गूंजने लगता है।

मुंबई के होटल में मंचूरियन में मिला चूहा, महिलाओं ने किया हंगामा

नवी मुंबई (एजेंसी)। शहर के ऐरोली सेक्टर 4 में एक हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां मौजूद पर्पल बटरफ्लाई होटल में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर खाना खाने गई महिलाओं के खाने में चूहे का बच्चा निकलने से हंगामा मच गया। महिलाओं ने तुरंत होटल के मैनेजर से इसकी शिकायत की। इसके बाद काफी समय तक होटल के स्टाफ ने अपनी गलती नहीं मानी, जिसके पश्चात महिलाओं ने वहां पर तीव्रता के साथ अपना विरोध जताना शुरू किया। तब जाकर होटल के लोगों ने अपनी गलती स्वीकार की।

इसके बाद महिलाओं ने खाले पुलिस स्टेशन में जाकर होटल मैनेजमेंट के खिलाफ मामला दर्ज करवाया। पुलिस ने महिलाओं द्वारा दिखाए गए फोटो के आधार पर मामला दर्ज कर लिया। मामला दर्ज होने के बाद पुलिस की एक टीम मौके पर पहुंची और होटल का निरीक्षण किया। महिलाओं ने कहा है कि वे शांत नहीं बैठेंगी, आगे भी वह सभी खाद्य विभाग में अपनी शिकायत दर्ज करवाएंगी, ताकि होटल मालिक और प्रबंधन पर उचित कार्रवाई हो। उनका कहना है कि इसी तरह लापरवाही के साथ ये लोग काम करेंगे और लोगों के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करते रहेंगे, इसलिए पूरे होटल के कर्मचारियों को सबक सिखाना आवश्यक है। शिकायतकर्ता ज्योति कोंडे का कहना है कि वह अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर खुशियां मनाने के लिए अन्य महिलाओं के साथ घूमने गई थीं। उसके बाद उन लोगों ने निर्णय लिया कि वे सभी पर्पल बटरफ्लाई होटल में जाकर डिनर करेंगी। सभी महिलाएं होटल में गई और वहां उन्होंने कई प्रकार की डिशेश मंगवाई थी। जब वे मंचूरियन खा रही थीं, तभी उन्हें खाने में चूहे का बच्चा नजर आया।

मध्यप्रदेश में खेल, खिलाड़ी व खेल मैदान के उन्नयन और युवाओं के समग्र विकास के लिए हो रहे अनवरत प्रयास- मंत्री सारंग

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्यप्रदेश में खेल और युवा कल्याण के क्षेत्र में किए जा रहे अभिनव प्रयासों ने प्रदेश को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। खेलों के प्रति युवाओं का रुझान बढ़ाने और उनके समग्र विकास के लिए प्रदेश सरकार ने %फिट इंडिया क्लब%, पार्थ योजना, खेलों बढ़ों अभियान% और (एमपीवायपी) (मध्यप्रदेश युवा प्रेरक अभियान जैसे महत्वपूर्ण नवाचारों की शुरुआत की है।

इन योजनाओं के माध्यम से प्रदेश के खेल मैदानों, खिलाड़ियों और खेल गतिविधियों को नया आयाम मिला है। सहकारिता, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने यह विचार तेलंगाना के हैदराबाद में आयोजित खेल चिंतन शिविर में साझा किए। मंत्री श्री सारंग ने मध्यप्रदेश में उपलब्ध खेल अधोसंरचनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि प्रदेश में 18 खेलों के लिए 11 खेल अकादमियां स्थापित की गई हैं। प्रदेश सरकार का उद्देश्य युवाओं को खेलों से जोड़कर उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करना है। इसके लिए मध्यप्रदेश में विश्वस्तरीय उच्च गुणवत्ता वाली खेल अधोसंरचना तैयार की गई है। इन 11 खेल अकादमियों में अंतर्राराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप प्रशिक्षण, अत्याधुनिक उपकरण और सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं।

उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश को खेल हब के रूप में विकसित करने के लिए हम निरंतर प्रयासरत हैं। हमारा संकल्प है कि हर युवा को खेल के क्षेत्र में अपने सपने पूरे करने का अवसर मिले और वे देश-विदेश में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकें। खेल चिंतन शिविर के द्वितीय दिवस के तृतीय सत्र में मध्यप्रदेश के खेल मॉडल पर विशेष प्रस्तुतिकरण दिया गया। इसमें प्रदेश में खेल अधोसंरचना के विकास, खिलाड़ियों को विश्वस्तरीय सुविधाएं उपलब्ध कराने और युवाओं को खेलों से जोड़ने के लिए किए गए नवाचारों की जानकारी साझा की गई। प्रदेश में खेलों के प्रति युवाओं के बढ़ते रुझान, आधुनिक खेल अकादमियों की स्थापना और खेल प्रतिभाओं को निखारने के लिए किए जा रहे सतत प्रयासों की केंद्रीय मंत्री डॉ. मंडाविया ने सराहना की। मध्यप्रदेश मॉडल ने शिविर में भाग ले रहे विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधियों, खेल विशेषज्ञों और नीति निर्माताओं का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया।

मंत्री श्री सारंग ने खेल चिंतन शिविर के द्वितीय दिवस के तृतीय सत्र वेलफेयर ऑफ स्पोर्टस पर्सन्स एंड कोचेस एंड स्पोर्टस रिक्रूटमेंट पॉलिसी में केंद्रीय मंत्री डॉ. मंडाविया के साथ सहभागिता की। इस सत्र में खिलाड़ियों और प्रशिक्षकों के कल्याण तथा खेल भर्ती नीति को और सुदृढ़ बनाने पर महत्वपूर्ण विचार-विमर्श हुआ।

इस अवसर पर केंद्रीय राज्य मंत्री युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय श्रीमती रक्षा निखिल खडसे, खेल एवं युवा कल्याण मंत्री, मिजोरम श्री पु लालनघिंगलोवा हमार भी उपस्थित रहे। केंद्रीय युवा कार्यक्रम और खेल तथा श्रम एवं रोजगार मंत्री डॉ. मंडाविया की अध्यक्षता में संपन्न हुए खेल चिंतन शिविर में भारत के खेल भविष्य और वैश्विक स्तर पर भारत के खेल दबदबे को बढ़ाने के लिए एक विस्तृत रोडमैप तैयार किया गया। शिविर के दौरान विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के खेल मंत्रियों, खेल प्रशासकों और विशेषज्ञों ने अपने-अपने राज्यों में खेलों के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों को साझा किया।

पशुओं की वैकल्पिक पशु चिकित्सा पद्धति पर कार्य शाला 11 एवं 12 मार्च को

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पशुओं की वैकल्पिक पशु चिकित्सा पद्धति पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन होटल पलाश रेसीडेंसी में 11 एवं 12 मार्च को पूर्वाह्न 10 बजे से होगा। प्रदेश के पशुपालन एवं डेयरी विभाग एवं मध्य प्रदेश राज्य पशु चिकित्सा परिषद के समन्वय से आयोजित इस कार्यशाला में दीनदयाल शोध संस्थान चित्रकूट के विषय विशेषज्ञ श्री अभय महाजन, प्रमुख सचिव, पशुपालन एवं डेयरी श्री उमाकांत उमराव, अध्यक्ष, वेटरनरी काउंसिल ऑफ इंडिया श्री उमेश चंद्र शर्मा शामिल होंगे। कार्यशाला में राष्ट्रीय स्तर के विषय विशेषज्ञों द्वारा प्रदेश के पशु चिकित्सकों को तकनीकी मार्गदर्शन दिया जाएगा। इसमें लगभग 110 प्रतिभागी सम्मिलित हो रहे हैं। कार्यशाला में वैकल्पिक पद्धति से पशुओं की चिकित्सा किए जाने संबंधी एक पॉलिसी बनाने का भी कार्य किया जाना है। इससे शासन द्वारा वैकल्पिक पशु चिकित्सा पद्धति को पशुओं की चिकित्सा के लिए प्रदेश में लागू किया जा सके । देश में आदिकाल से पारंपरिक एवं वैकल्पिक पशु चिकित्सा पद्धति का उपयोग किया जाता था। इसे पुनः पशुओं की चिकित्सा में बढ़ावा देने एवं जन-जन तक पहुंचाने के लिए यह कार्य शाला आयोजित की जा रही है। वर्तमान में आधुनिक चिकित्सा पद्धति के कारण मनुष्यों एवं पशुओं में जीवाणु रोधी दवाइयाँ के प्रति प्रतिरोधकता का बढ़ना महामारी का रूप ले रहा है, जो एक भयानक वैश्विक खतरा बनता जा रहा है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति से एवं एंटीबायोटिक के दुरुपयोग से इसका दुष्प्रभाव मनुष्य एवं पशुओं में देखा जा रहा है। इसके कारण एंटी माइक्रोबियल रेजिस्टेंस की वैश्विक समस्या उत्पन्न हो गई है। इससे निपटने के लिये अल्टरनेट वेटरनरी प्रैक्टिस जैसे आयुर्वेद, होम्योपैथी, पारंपरिक चिकित्सा, यूनानी चिकित्सा इत्यादि का प्रयोग अत्यंत आवश्यक है, जिससे कम खर्च पर आसानी से पशुओं की बिना किसी दुष्प्रभाव के चिकित्सा की जा सकती है।

माधव नेशनल पार्क बना प्रदेश का 9वां टाइगर रिजर्व, लोकार्पण 10 को

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। शिवपुरी का माधव नेशनल पार्क अब मध्यप्रदेश का 9वां और देश का 58वां टाइगर रिजर्व बन गया है। राज्य सरकार ने भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972 के तहत इसकी अधिसूचना शुक्रवार को जारी की। टाइगर रिजर्व का कुल क्षेत्रफल 1651.38 वर्ग किमी तय किया गया है। इसमें 375.28 वर्ग किमी का कोर क्षेत्र और 1276.15 वर्ग किमी का बफर क्षेत्र शामिल है। कोर क्षेत्र में आरक्षित वन, संरक्षित वन और राजस्व क्षेत्र को जोड़ा गया है। सीएम डॉ. मोहन यादव ने कहा कि माधव टाइगर रिजर्व बनने से ग्वालियर-चंबल अंचल में वन्यजीव पर्यटन को नई दिशा मिलेगी। यहां चीता, क्रोकोडाइल, डॉल्फिन के बाद टाइगर भी पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र होंगे। 10 मार्च को मुख्यमंत्री यादव एक नर और एक मादा टाइगर को छोड़कर इस रिजर्व का लोकार्पण करेंगे।

भोपाल एम्स में एआई से कैंसर की स्क्रीनिंग, शुरुआती स्टेज में पहचान

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भोपाल एम्स में अब कैंसर की स्क्रीनिंग और भी तेज और सटीक होगी। 40 लाख रुपए की लागत से आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित मशीन लगाई जा रही है। यह बिना लक्षण वाले मरीजों में भी शुरुआती स्टेज में कैंसर की पहचान करने में सक्षम होगी। इससे मरीजों को समय रहते इलाज मिलेगा और कीमोथेरेपी के दुष्प्रभाव कम होंगे। एम्स के डायरेक्टर डॉ. अजय सिंह ने बताया कि पारंपरिक तरीकों की तुलना में एआई स्क्रीनिंग कई गुना तेज और अधिक सटीक होगी, जिससे महंगे सीटी स्कैन और एमआरआई की जरूरत कम होगी। यह मशीन मरीज की जीवनशैली और आनुवांशिक डेटा के आधार पर कैंसर के खतरे का भी आकलन कर सकेगी।

हाईकोर्ट के निर्देश पर निकाय कर्मचारियों को मिली बड़ी राहत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश में नगरीय प्रशासन एवं विकास संचालनालय ने हाईकोर्ट जबलपुर के निर्देश पर 13 सहायक मानचित्रकार और समयपाल को उपयंत्री के पद पर पदोन्नत किया है। यह कार्यवाही नगर पालिका परिषद सारणी के समयपाल महेश कुमार त्रिवेदी की याचिका पर आए फैसले के बाद हुई। हाईकोर्ट ने कर्मचारियों के पक्ष में फैसला दिया था। शासन द्वारा पदोन्नति न देने पर अवमानना याचिका दायर की गई। इसके बाद हाईकोर्ट ने 5 नवंबर 2024 तक पदोन्नति के आदेश दिए। मध्य प्रदेश में मई 2016 से पदोन्नति पर रोक लगी हुई है। इस दौरान करीब डेढ़ लाख कर्मचारी बिना पदोन्नति के सेवानिवृत्त हो चुके हैं। हालांकि, हाईकोर्ट से जीतकर आने वाले कर्मचारियों को पदोन्नति मिल रही है। चार दिन पहले विधि विभाग के 125 कर्मचारियों को भी पदोन्नत किया गया। प्रदेश के कर्मचारी सरकार के इस रवैये से नाराज हैं। उनका कहना है कि जब हाईकोर्ट के निर्णय पर सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अधीन पदोन्नति संभव है, तो सभी कर्मचारियों को यह लाभ मिलना चाहिए। लेकिन शासन स्तर पर कर्मचारियों को कोई आश्वासन नहीं दिया जा रहा है।

स्वच्छ, हरे-भरे, प्रदूषण और नशा मुक्त ग्वालियर के लिए ऊर्जा मंत्री की पहल पर हुआ संगीतमय सुन्दरकाण्ड

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। स्वच्छ, हरा-भरा, प्रदूषण और नशा मुक्त ग्वालियर बनाने की दिशा में ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर द्वारा चलाए जा रहे अभियान के तहत शनिवार को जेसी मिल स्कूल के समीप स्पोर्टस काम्प्लेक्स में संगीतमय सुन्दरकाण्ड पाठ किया गया। इस दौरान ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने महिला दिवस के अवसर पर मातृशक्ति का अभिनन्दन भी किया।

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ग्वालियर को स्वच्छ, हरा-भरा, प्रदूषण मुक्त और नशा मुक्त बनाने की दिशा में ग्वालियरवासियों के साथ मिलकर अभियान चला रहे हैं। इसी अभियान के तहत बीती जनवरी माह से प्रतिदिन शाम 7 बजे श्री सीताराम धुन का वाचन शुरु किया गया है। इस सीताराम धुन को शनिवार 8 मार्च को दो माह पूर्ण हो चुके हैं। इसी उपलक्ष्य में श्री सुन्दरकाण्ड पाठ का आयोजन बिरला नगर जेसी मिल स्कूल परिसर स्थित स्पोर्ट्स काम्प्लेक्स में किया गया। इस अवसर पर हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने सुन्दरकाण्डपाठ का मधुर श्रवण किया। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने सुन्दरकाण्डपाठ में शामिल समस्त श्रद्धालुओं को प्रसादी के साथ एक-एक सुन्दरकाण्डपुस्तिका, प्रयागराज की मोक्षदायिनी मां गंगा का जल, कैलेण्डर और डस्टबिन प्रदान किया। उन्होंने शपथ दिलाई कि मां गंगा को साक्षी मानकर शपथ लें कि आज से प्रतिदिन अपनी दैनिक दिनचर्या में कुछ समय निकालकर ग्वालियर को स्वच्छ, हरा-भरा, प्रदूषण मुक्त और नशा मुक्त बनाने के अभियान के लिए खुद को समर्पित करेंगे और अपने नजदीक रहने वाले लोगों को भी इस अभियान से जुड़ने और साफ-सफाई रखने के लिए प्रेरित करेंगे। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने उपस्थित लोगों का आवाह्न किया कि वे एक अच्छे समाज का निर्माण करें। उन्होंने कहा कि आपका यह सेवक गांव से आया था और आज ईश्वर और आप सभी की कृपा से मध्यप्रदेश सरकार में मंत्री है।

शक्ति वॉकथॉन में महिला स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का दिया गया संदेश

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा महिला स्वास्थ्य जागरूकता रैली शक्ति वॉकथॉन का आयोजन किया गया। अटल पथ भोपाल से शक्ति वॉकथॉन में 2000 से अधिक महिलाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के संदेश को सशक्त बनाया। इस अवसर पर प्रमुख सचिव, लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री संदीप यादव, आयुक्त स्वास्थ्य श्री तरूण राठी, मिशन संचालक डॉ. सलोनी सिडाना, वरिष्ठ संयुक्त संचालक एवं स्टेट नोडल अधिकारी (प्रिवेंटिव गायनोकॉलोजी, ऑन्कोलॉजी एवं इनफर्टिलिटी) एवं संचालक राज्य आईईसी ब्यूरो डॉ. रचना दुबे सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

रैली के दौरान शक्ति (स्प्रेडिंग हेल्थ अवेयरनेस एंड नॉलेज थ्रू टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन) पहल के लोगो का अनावरण किया गया। इस अवसर पर पांच ऐसी महिलाओं को सम्मानित किया गया जो सर्वाइकल और ब्रेस्ट कैंसर से विजयी होकर स्वस्थ जीवन जी रही हैं, साथ ही उन महिलाओं को भी सम्मानित किया गया जिन्होंने दीर्घकालिक उपचार के पश्चात मातृत्व सुख प्राप्त किया। रैली में जुम्बा और अन्य फिटनेस गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिससे महिलाओं में स्वास्थ्य और फिटनेस के प्रति रुचि बढ़ी।

सूक्ष्म सिंचाई परियोजनाओं से अब किसान वर्ष में तीन बार फसलें पैदा करेंगे-उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा ने शनिवार को मंदसौर जिले के ग्राम रठाना और भावता में 26 करोड़ 63 लाख 76 हजार की लागत से निर्मित होने वाली 6 सड़कों का भूमि पूजन किया। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में सूक्ष्म सिंचाई परियोजनाओं से अब किसान एक वर्ष में 3 बार फसल पैदा कर सकेंगे। उप मुख्यमंत्री श्री देवडा ने कहा कि, 2047 में देश विश्व की सबसे बड़ी ताकत होगी। 2047 में आजादी के 100 वर्ष पूर्ण होंगे। इसके लिए सरकार ने आगामी 25 साल का रोड मैप तैयार किया है। उन्होंने कहा कि देश की जनता की ताकत को आधार बनाकर देश को विश्व गुरु के स्थान पर लाने का संकल्प सरकार ने लिया है। आर्थिक रूप से देश संपन्न होगा विश्व की तीसरी सबसे बड़ी शक्ति होगी। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने मंदसौर में औद्योगिक निवेश हो इस पर लगातार कोशिश की जा रही है। कोई भी परिवार बिना पक्के मकान के नहीं रहेगा। उन्होंने कहा कि सरकार युवा, गरीब, किसान, महिलाओं के उत्थान के लिये काम कर रही हैं। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि हर जिले में मेडिकल कॉलेज बनाए जा रहे हैं। जिससे आसानी से गरीब व्यक्ति को स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सकें। आयुष्मान कार्ड ने गरीबों को नई जिंदगी प्रदान की है। उनके जीवन को बचाया है। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा शनिवार को ग्राम रठाना में 11 करोड़ 26 लाख 21 हजार रुपए से निर्मित होने वाले सड़कों का भूमि-पूजन किया। भूमि पूजन के अंतर्गत 1 करोड़ 26 लाख रुपए की लागत से निर्मित होने वाली पिपलिया कराडिया गांव से शासकीय हाई स्कूल तक सड़क मार्ग, 7 करोड़ 91 लाख 77 हजार रुपए की लागत से निर्मित होने वाली लच्छाखेड़ी से रठाना होते हुए नेतावली तक सड़क मार्ग, 2 करोड़ 8 लाख 39 हजार रुपए की लागत से निर्मित होने वाली खंडेरिया मारू से नावन खेड़ी तक सड़क मार्ग शामिल है। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने ग्राम भावता में 15 करोड़ 37 लाख 55 हजार रुपए से निर्मित होने वाले सड़कों का भूमि-पूजन किया।

भारत के शिक्षा के मंदिर, चरित्र निर्माण के कारखाने हैं -उच्च शिक्षा मंत्री परमार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। भारत की शिक्षा विश्व मंच पर सर्वश्रेष्ठ शिक्षा थी, इसलिए भारत विश्वगुरु की संज्ञा से सुशोभित था। विश्व भर के लोग, भारत में शिक्षा ग्रहण एवं अध्ययन करने आते थे। हमारे पूर्वज शिक्षित और ज्ञानवान थे लेकिन अतीत के कालखंडों में विदेशी इतिहासकारों द्वारा भारतीय इतिहास का गलत चित्रण किया गया। इस ऐतिहासिक छल से मुक्त होने के लिए स्वत्व के भाव की जागृति के साथ, भारतीय ज्ञान परम्परा का अध्ययन करने की आवश्यकता है। भारतीय ज्ञान, परम्परा एवं मान्यता के रूप में भारतीय समाज में सर्वत्र विद्यमान है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर, भारतीय समाज में परंपराएं एवं मान्यताएं स्थापित हुई हैं। भारतीय समाज, विशुद्ध रूप से वैज्ञानिक दृष्टिकोणधारक समाज है। हर विधा-हर क्षेत्र में विद्यमान भारतीय ज्ञान को युगानुकुल परिप्रेक्ष्य में वर्तमान वैश्विक आवश्यकतानुरूप, पुनः शोध एवं अनुसंधान कर दस्तावेजीकरण करने की आवश्यकता है। यह बात उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार ने शनिवार को भोपाल स्थित सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव भव्या 2024-25 के समापन समारोह और एक भारत-श्रेष्ठ भारत = सांस्कृतिक मेला कार्निवल में सम्मिलित होकर कही। उच्च शिक्षा मंत्री श्री परमार ने कहा कि विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों को पुरातन भारतीय ज्ञान को, पुनः शोध-अनुसंधान एवं अध्ययन के साथ युगानुकुल परिप्रेक्ष्य में दस्तावेजीकरण से समृद्ध करने के लिए सहभागिता करने की आवश्यकता है। श्री परमार ने कहा कि स्वतंत्रता के लिए जनजातीय नायकों ने अपना बलिदान दिया, उनके शौर्य एवं पराक्रम पर गर्व करने का भाव जागृत करना होगा।

हिलाओं ने उद्यम व्यवसाय शुरू कर स्वालम्बन का रास्ता तय किया-मंत्री पटेल

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास व श्रम मंत्री श्री प्रलाद सिंह पटेल ने नरसिंहपुर जिले के विकासखंड करेली के अंतर्गत करेली बस्ती में 50 लाख रुपये की राशि से नवनिर्मित उन्नति सामुदायिक प्रशिक्षण केन्द्र का लोकार्पण किया। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मंत्री श्री सिंह ने नगर पालिका अध्यक्ष करेली श्रीमती सुशीला ममार, कलेक्टर श्रीमती शीतला पटले, पुलिस अधीक्षक श्रीमती मृगाखी डेका और अन्य महिला कर्मचारियों, पुलिस व महिला जनप्रतिनिधियों का पुष्पगुच्छ देकर उनका सम्मान किया। कार्यक्रम में मंत्री श्री पटेल ने एक हजार 132 स्वसहायता समूहों को संवर्धन हेतु बैंक से 28 करोड़ 27 लाख रुपये का चैक प्रदान किया। उन्होंने आजीविका मिशन की महिलाओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। मंत्री श्री पटेल ने करेली बस्ती में 5 लाख रुपये की लागत से निर्मित होने वाले भगवान बिरसा मुंडा भवन का भूमिपूजन भी किया।

मुख्य कार्यक्रम भोपाल में आयोजित किया गया, जिसमें लाड़ली बहनों के खातों में लाड़ली बहना योजना की राशि अंतरित की गई है। उन्होंने वीरांगना रानी अवंतीबाई के बारे में बताते हुए कहा कि कम उम्र में राज्य का संचालन कर अंग्रेजों को चुनौती दी। मंत्री श्री सिंह ने वीरांगना रानी दुर्गावती के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि आपको बहनें ऊर्जा, पत्नी सहायता, बेटी संबल देती है। जितनी हमारी परंपरायें, सामर्थ, भाषा हैं, इसको देने वाली हमारी मातृशक्ति है। हम नदी को माता कहते हैं क्यों नदी सिर्फ पानी नहीं देती, नदी जीवन, पानी प्राकृति का पालन करता है, प्रकृति के संतुलन का काम भी करती है और जीव- जंतुओं को जीवन देने का काम करती है। उन्होंने कहा कि हमारी सनातन व्यवस्था में मातृसत्ता सर्वोच्च सत्ता है। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि मप्र में लगभग 5 लाख 20 हजार से ज्यादा स्वसहायता समूह है। इसमें लगभग 62 लाख महिलायें कहीं न कहीं से जुड़ी हुई हैं। इसमें लगभग 3.30 लाख महिलायें ऐसी जिन्होंने उद्यम का व्यवसाय शुरू करके स्वालम्बन का रास्ता तय किया है। प्रदेश की कई बहनें लखपति बन गई हैं। उन्होंने आजीविका मिशन की कई महिलाओं के सशक्त होने के उदाहरण भी बताये।

सरकार ने जनकल्याणकारी योजनाओं से महिलाओं के आर्थिक उन्नति के द्वार खोले-खाद्य मंत्री श्री राजपूत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा है कि मोदी सरकार ने जनकल्याणकारी योजनाओं से महिलाओं के आर्थिक उन्नति के द्वार खोल दिए। प्रधानमंत्री की मंशा के अनुरूप मध्यप्रदेश में भी मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार मातृशक्ति को आगे बढ़ाने का कार्य कर रही है। खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने यह बात प्रभार के जिले गुना के कलेक्ट्रेट सभागार में महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित सम्मान समारोह में कही। खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि आज महिलाएं घर आंगन से निकलकर चांद पर जा रही हैं। आज हर क्षेत्र में महिलाएं सक्रिय हैं। बदलते समय के अनुसार महिलाओं की शक्ति पूरे विश्व में बढ़ रही है। केंद्र और राज्य सरकार द्वारा महिलाओं के हित में चलाई जा रही फ्लैगशिप योजनाओं का जिक्र करते हुए श्री राजपूत ने कहा कि भाजपा सरकार ने महिलाओं के लिये कल्याणकारी योजनाओं के संचालन के साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में उनके लिए आरक्षण सुनिश्चित कर उन्हें महत्वपूर्ण पदों तक पहुंचाया है।

खाद्य मंत्री मंत्री श्री राजपूत ने लाड़ली बहना योजना का जिक्र करते हुए कहा कि लाडली लक्ष्मी योजना और मुख्यमंत्री कन्यादान योजनाओं ने माताओं और बहनों के सरकार के प्रति बढ़ते विश्वास के कारण ही प्रदेश में बहनों का ढेर आशीर्वाद मिला। आज हर जगह बहने कंधा से कंधा मिलाकर कार्य कर रही हैं। श्री राजपूत ने कहा कि हर्ष की बात यह है कि हमारी माताओं और बहनों को जो भी जिम्मेदारी किसी भी क्षेत्र में मिली है, उसे उन्होंने बड़ी ही जिम्मेदारी से निभाया है।

कार्यक्रम में खाद्य नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री राजपूत में महिलाओं और बच्चों के लिए जहां बेटी बचाओं और बेटी पढ़ाओ को लेकर संदेश लिखा और सेल्फी पॉइंट पर सेल्फी भी खिंचवाई।

कार्यक्रम में विधायक प्रियंका मीना, विधायक श्री पन्नालाल शाक्य, कलेक्टर श्री किशोर कन्याल, सीईओ जिला पंचायत श्री अभिषेक दुबे सहित अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

त्यौहारों के समय कानून व व्यवस्था की निगरानी रखने बैठक

राजस्व एवं पुलिस अधिकारी संयुक्त भ्रमण कर कानून व्यवस्था की निगरानी रखें : कमिश्नर

आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों पर करें कठोर कार्यवाही : डीआईजी

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। कमिश्नर रीवा संभाग बी एस जामोद तथा डीआईजी साकेत प्रकाश पाण्डेय द्वारा आगामी त्यौहारों के दौरान शांति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए की गई तैयारियों की विस्तृत समीक्षा की गई। कमिश्नर रीवा संभाग की जामोद ने कहा कि माह मार्च और अप्रैल त्यौहारों के दृष्टि से महत्वपूर्ण है। होली, ईद, नवरात्रि, रामनवमी जैसे महत्वपूर्ण त्यौहारों को हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा। इस दौरान कानून एवं व्यवस्था को बनाए रखने के लिए राजस्व तथा पुलिस अधिकारी संयुक्त रूप से भ्रमण करें। लोगों को त्यौहारों के दौरान सुरक्षित वातावरण देने जिले के प्रमुख स्थानों में फ्लैग मार्च करें और आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों को शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में त्यौहार मनाने की समझाइस दें।

कनिश्नर ने कहा कि त्यौहारों के एक-दो दिन पूर्व से ही शहर के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी कड़ी निगरानी रखें। होलिका दहन के लिए चिन्हांकित स्थलों का निरीक्षण कर लें। यह सुनिश्चित करें कि बिजली के तारों के नीचे होलिका दहन नहीं हो। होलिका दहन के लिए हरे पौधो को नुकसान नहीं पहुंचाएं त्यौहारों के दौरान नशा करके हुडदंग करने वालों, यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले तथा शांति व्यवस्था बिगाडने वालों के विरूद्ध कठोर दण्डात्मक कार्यवाही करें। होली के एक दिन पूर्व से ही शराब की बिक्री पर कड़ी निगरानी रखेंगे तथा अवैध शराब एवं मादक पदार्थों की बिक्री पर कड़ाई से रोक लगाएंगे। इस दौरान मिठाई की दुकानों की भी सतत रूप से जांच कर नमूने लिए जाएं। दूषित एवं अमानक खाद्य सामग्री की बिक्री पर कड़ी कार्यवाही की जाए।

स्वास्थ्य केन्द्रों को अलर्ट मोड में रहने के निर्देश: कमिश्नर ने होली के त्यौहार के दौरान जिला चिकित्सालय सहित जिले के सभी स्वास्थ्य केन्द्रों को अलर्ट मोड में रहने के निर्देश दिए हैं। विभिन्न प्रकार की दुर्घटनाओं की संभावना को दृष्टिगत रखते हुए कमिश्नर ने कहा कि होली के दौरान सभी स्वास्थ्य केन्द्रो की आपात व्यवस्थाओं को सक्रिय रखेंगे। सभी चिकित्सक और पैरामेडिकल स्टाफ ड्यूटी के दौरान उपस्थित रहेंगे।

सभी 108 एम्बुलेंस ड्यूटी में तैनात रहेगी। इसके लिए एम्बुलेंस संचालकों के साथ आवश्यक बैठकें कर लें। दुर्घटना की स्थिति में पूरी संवेदनशीलता और तत्परता से कार्यवाही करेंगे। सभी स्वास्थ्य केन्द्रों में घायलों को समुचित उपचार की व्यवस्था कर लें। इसके साथ ही कमिश्नर ने सभी अग्निशमन वाहनों को भी अलर्ट मोड में रहने के निर्देश दिए हैं। विभिन्न प्रकार की दुर्घटनाओं की संभावना को दृष्टिगत रखते हुए कमिश्नर ने कहा कि होली के दौरान सभी स्वास्थ्य केन्द्रो की आपात व्यवस्थाओं को सक्रिय रखेंगे। सभी चिकित्सक और पैरामेडिकल स्टाफ ड्यूटी के दौरान उपस्थित रहेंगे।

डीआईजी साकेत प्रकाश पाण्डेय ने कहा कि त्यौहारों के दौरान लोगों को एक सुरक्षित वातावरण दें जिससे लोग हर्षोल्लास के साथ त्यौहार मनाएं। होली के त्यौहार के दौरान विशेष सतर्कता रखनी आवश्यक है। राजस्व एवं पुलिस अधिकारी कानून एवं व्यवस्था के दृष्टिगत नए सिरे से आवश्यक तैयारी कर लें। पिछले पांच वर्षो के दौरान त्यौहारों के दौरान हुई दुर्घटनाओं एवं अपराधों के आधार पर कार्य योजना तैयार कर लें। असामाजिक तत्वों को चिन्हांकित कर उनके ऊपर कठोर प्रतिबंधात्मक कार्यवाही करें। होली के दो दिन पूर्व से ही वाहनों की जांच प्रारंभ कर दें। नशा कर वाहन चलाने वाले, ओवर स्पीडिंग करने वालों तथा दो पहिया वाहनों में तीन सवारी करने वालों के विरूद्ध कड़ी कार्यवाही करें। डीआईजी ने कहा कि होली के दौरान सभ थानों में रैपिड एक्शन टीम को तैनात रखें। एसडीआर एफ की टीम को भी अलर्ट मोड में रखें। जिले के सभी पिकनिक स्पाट का भी सुरक्षा के दृष्टि से अवलोकन कर लें। भीड भाड वाले स्थानों की ड्रोन कैमरे से निगरानी रखें।

ध्वनि विस्तारक यंत्रों के अनियंत्रित उपयोग पर होगी कार्यवाही: डीआईजी ने ध्वनि विस्तारक यंत्रों के उपयोग के संबंध में जारी निर्देशों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। उन्होने कहा कि सभी डीजे संचालकों के साथ बैठक कर उन्हे निर्देशों का कड़ाई से पालन करने की समझाइस दें। डीजे में अश्लील गाने बजाने पर ऐसे लोगों के विरूद्ध सख्त कार्यवाही की जाए। उन्होने स्वास्थ्य केन्द्रों, मंदिरों, माजिदों तथा महत्वपूर्ण स्थलों पर पर्याप्त बल लगाने के निर्देश दिए हैं।

कमिश्नर तथा डीआईजी ने महाकुंभ के दौरान भीड़ नियंत्रण के लिए की गई व्यवस्थाओं के लिए जिला प्रशासन एवं पुलिस प्रशासन की सराहना की। उन्होने कहा कि मुख्यमंत्री महोदय द्वारा भी उक्त व्यवस्था के लिए संभाग के सभी जिलों की सराहना की गई है।

बैठक में कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी तथा पुलिस अधीक्षक डॉ. रवीन्द्र वर्मा ने त्यौहारों के दौरान कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए किए गए प्रबंधों के संबंध में जानकारी दी। उन्होने आश्वस्त किया है कि जिले में त्यौहारों के दौरान पूरी मुस्तैदी से निगरानी रखी जाएगी।

बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अरविन्द श्रीवास्तव, उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा, सिहावल एसपी मिश्रा, चुरहट शैलेश द्विवेदी, मझौली आरपी त्रिपाठी, कुसमी प्रिया पाठक, उप पुलिस अधीक्षक गायत्री तिवारी, एसडीओपी आशुतोष द्विवेदी, रोशनी ठाकर सहित समस्त संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

अज्ञात वाहन की टक्कर से 28 वर्षीय युवक की मौत

शिवरात्रि मेले से लौटते समय हुआ हादसा, सीसीटीवी खंगाल रही पुलिस

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर में शनिवार देर रात सड़क हादसे में 28 वर्षीय युवक की मौत हो गई। बसारी गांव निवासी करन घुमक्कड़ शिवरात्रि मेले में पत्तल उठाने का काम करने के बाद रात करीब 11 बजे बाइक से घर लौट रहा था। बमीठा-झांसी नेशनल हाइवे पर बसारी पुलिया के पास एक अज्ञात वाहन ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। हादसे के बाद वाहन चालक मौके से फरार हो गया। राहगीरों ने घटना की सूचना पुलिस को दी। पुलिस मौके पर पहुंची और घायल करन को एंबुलेंस से जिला अस्पताल ले गई, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही पुलिस: मृतक के चाचा अमर सिंह ने बताया कि उन्हें घटना की जानकारी पुलिस से मिली। बमीठा थाना प्रभारी आशुतोष श्रुतिया ने बताया कि पुलिस मामले की जांच कर रही है और आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं।

सफाई कर्मी था युवक: करन आदिवासी समुदाय से था और शादी-विवाह समारोहों में सफाई कर्मी के रूप में काम करता था। पुलिस ने सुबह पंचनामा बनाकर शव का पोस्टमार्टम कराया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर दिव्यांग बच्चों के कल्याण में योगदान देने वाली शिक्षिकाओं का सम्मान

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर राजरानी सेवा एवं शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान, छत्रपति नगर, रीवा में एक विशेष सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय न्यास (नेशनल ट्रस्ट) सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार से पंजीकृत संस्थान द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम में दिव्यांग बच्चों के कल्याण में विशेष योगदान देने वाली संस्था की संस्थापिका रानी सिंह ने उपस्थित सभी महिला शिक्षकों को सम्मानित कर उनका उत्साहवर्धन किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा, "वैसे तो हर दिन ही महिलाओं का होता है, लेकिन यह विशेष दिन महिलाओं के परिश्रम और योगदान को आभार स्वरूप मनाने का अवसर है। इस दिन हम सभी महिलाओं का सम्मान कर उनके कार्यों की सराहना करते हैं।" इस अवसर पर कार्यक्रम में प्रमुख रूप से संस्था अध्यक्ष अजय सिंह, सचिव संजय सिंह, संचालिका दीप्ति सिंह परिहार, फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. दिलीप दीपांकर, विशेष शिक्षिकाएं नीता रजक, साधना पांडे, पूनम मिश्रा, रंजना सिंह, तरन्नुम निशा, निर्मला सिंह, राजेश सिंह, युवराज सिंह सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम में महिला शिक्षकों के अद्वितीय योगदान को सराहते हुए उन्हें प्रशस्ति पत्र और उपहार देकर सम्मानित किया गया। यह आयोजन नारी सशक्तिकरण को बढ़ावा देने और समाज में उनके योगदान को मान्यता देने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था।

मवेशी को बचाने में पलटा ऑटो

करमाई गांव के 7 लोग घायल, एक महिला गंभीर

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी में मवेशी को बचाने की कोशिश एक ऑटो पलट गया। हादसे में 7 लोग घायल हो गए। हादसा रविवार दोपहर साढ़े 12 बजे मझौली के देउरी गांव में हुआ है। ऑटो में करमाई गांव के सात लोग सवार थे। जो मझौली बाजार सामान खरीदने जा रहे थे।

इनमें महिलाएं और बच्चे भी शामिल थे। हादसे में महेशिया कोल गंभीर है। वहीं प्ररबतिया कोल, छोटी कोल, सुभिया कोल, चौमासा कोल और काजल कोल को भी चोटें आईं हैं। एक घायल को कम चोटिल था। जो इलाज के बाद घर लौट गया।

स्थानीय लोगों का कहना है कि सड़क पर पशुओं की संख्या बढ़ती जा रही है। इससे इस तरह की दुर्घटनाएं आम हो गई हैं। ग्रामीणों ने प्रशासन से मवेशियों की आवाजाही को नियंत्रित करने की मांग की है। इधर, पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। आगे की कार्रवाई की जा रही है।

स्व सहायता समूह से जुड़कर महिलाएं आर्थिक दृष्टि से हो रही है सशक्त : सरपंच

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। विकासखण्ड प्रबंधक म.प्र.डे.रा.ग्रामीण आजीविका मिशन सिहावल ने जानकारी देकर बताया कि कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सीधी अंशुमन राज के निर्देशन में 8 मार्च अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर विकासखण्ड सिहावल के ग्राम पंचायत बघोर में सैकड़ो महिलाओं की उपस्थित में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर म.प्र. सरकार द्वारा आयोजित कार्यक्रम के प्रसारण को टेलीकास्ट के माध्यम से दिखाया व सुनाया गया। साथ ही विशेष ग्राम सभा का आयोजन किया गया।

इस दौरान ग्राम पंचायत के सरपंच आशुतोष कुमार द्विवेदी ने कहा कि हर वर्ष 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है, जो महिलाओं के सामाजिक और आर्थिक योगदान को सम्मानित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। आज का दिन महिलाओं के अधिकारों की रक्षा सम्मान और सशक्तीकरण के जागरूकता फैलाने का माध्यम बनता है और आजीविका मिशन से जुड़कर स्व सहायता समूह की महिलायें आर्थिक दृष्टि से सशक्त हो रही हैं। लखपति दीदी बन रही है। इसीलिये विशेष महिला ग्राम सभा आयोजन कर उनसे जुड़े हुये विषय पर विशेष चर्चा की जा रही है।

कार्यक्रम में उपस्थित सभी जनों द्वारा सत्यनिष्ठा की शपथ ली गई एवं लखपति दीदी को सम्मानित किया गया। उजाला संकुल स्तरीय संगठन की सीता मिश्रा द्वारा बताया गया कि हमारे संगठन के साथ ही पांच संकुल स्तरीय संगठन व 193 ग्राम संगठन के माध्यम से महिला दिवस का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, समूह की बहने, पंच एवं ग्राम संगठन के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

राजरानी सेवा संस्थान में किया गया महिलाओं का सम्मान

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। राजरानी सेवा संस्थान में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन किया गया एसएम राज सिंह कान्वेंट एवं समावेशी विद्यालय गिरिजापुर की प्राचार्या अनीता विश्वकर्मा के द्वारा दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम को शुरू किया गया। कार्यक्रम में महिलाओं के महत्व का संपूर्ण व्याख्यान किया गया राजरानी सेवा संस्थान के संचालक संजय सिंह गहरवार के द्वारा महिलाओं कि घर से लेकर देश तक उपयोगिता क्या है उसके बारे में बताया गया वह क्यों जीवन में आवश्यक है इसके बारे में भी प्रकाश डाला गया प्राचार्या के द्वारा बताया गया की महिला हमारे घर परिवार समाज देश की नींव होती है। कार्यक्रम में आरती पटेल उपाध्यक्ष अमिता सिंह सामाजिक न्याय पन्ना कीर्ति शुक्ला वर्षा साहू मधु शुक्ला प्रगति साहू साक्षी पांडे पूजा वर्मा कोमल चर्मकार सुभाष पटेल ललिता एवं केदार आदि उपस्थित रह।

इंस्टाग्राम लोकेशन से अहमदाबाद में पकड़ा गया दूसरा आरोपी

नाबालिग के साथ जंगल में ले जाकर रेप किया था, 2 महीने से था फरार

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले में रविवार को नाबालिग बच्ची के साथ रेप मामले में दूसरे आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी विक्रम सिंह पिछले दो महीने से फरार चल रहा था। घटना कुसमी थाना क्षेत्र में हुई है।सायबर सेल की मदद से पुलिस इंस्टाग्राम लोकेशन को ट्रेस कर उसे अहमदाबाद से पकड़ लिया। आरोपी को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उसे जेल भेजा गया है।

कुसमी थाना प्रभारी भूपेश बैस के अनुसार, यह घटना दिसंबर माह में हुई थी। इस मामले में एक आरोपी सुखमंत सिंह गोड़ को पहले ही गिरफ्तार किया जा चुका था। पुलिस के अनुसार, आरोपियों ने नाबालिग को जंगल में ले जाकर उसके साथ रेप किया था और उसे बुरी तरह पीटा भी था।

शराब पीने से रोकने पर की पत्नी की हत्या

अमरकंटक में पति ने पीट-पीटकर मार डाला, रात भर शव के पास बैठा रहा

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर जिले के अमरकंटक के गढ़ीदादर गांव के ढड्डू टोला में एक पति ने अपनी पत्नी की पीट-पीटकर हत्या कर दी। घटना शनिवार की है। राम खिलामन और उनकी पत्नी दुर्गावती के बीच शराब पीने को लेकर विवाद हुआ। पत्नी ने पति को शराब पीने से मना किया। इससे नाराज होकर राम खिलामन ने पत्नी की इतनी पिटाई की कि उसकी मौत हो गई।

पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार: हत्या के बाद आरोपी पति रात भर मृतका के शव के पास बैठा रोता रहा। रविवार सुबह जब उसका नशा उतरा, तब उसने पड़ोसियों को घटना की जानकारी दी। ग्रामीण जब मौके पर पहुंचे तो देखा कि दुर्गावती का शव खून से लथपथ पड़ा है। ग्रामीणों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची अनूपपुर पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आरोपी पति को गिरफ्तार कर लिया है।

महिला दिवस पर समूह की महिलाओं को किया गया सम्मानित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। महिला दिवस के अवसर ग्राम पंचायत लोही के एसआरएलएम भवन में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महिला दिवस के अवसर पर समूह के महिलाओं द्वारा आजीविका मिशन में माध्यम से उनके आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति के विषय में अपने अनुभव व्यक्त किये। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ओम प्रकाश बेदुआ जिला परियोजना अधिकारी एसआरएलएम रीवा, सरोज कुमार जिला प्रबंधक नाबार्ड रीवा, डॉ चन्द्रजीत सिंह वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केंद्र रीवा रहे। मुख्य अतिथि द्वारा बताया गया कि महिला दिवस का उद्देश्य महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना और उन्हें सम्मान देना है।

अगर हम किसी समाज को मजबूत बनाना चाहते हैं, तो सबसे पहले हमें महिलाओं को सशक्त बनाना होगा।

महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को उनके अधिकार, शिक्षा, रोजगार और स्वतंत्रता देना ताकि वे अपने जीवन को अपनी शर्तों पर जी सकें। कार्यक्रम का संचालन जीतेन्द्र सिंह जिला प्रबंधक एग्रीकल्चर द्वारा किया गया। डिजिटल इंडिया अभियान अंतर्गत सीएससी के माध्यम से ग्राम पंचायत में उत्कृष्ट कार्य करने वाली समूह की महिलाओं को प्रशस्ति पत्र दे कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में ज्ञानेंद्र तिवारी जिला प्रबंधक फाइनेंसियल इन्क्लुसन, जिला प्रबंधक सीएससी रीवा रवि शंकर मिश्रा एवं विक्रम पाण्डेय सहित समूह की महिलाएं एवं आजीवका मिशन के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा अभियान के तहत कमिश्नर तथा डीआईजी ने हरी झंडी दिखाकर यातायात जागरूकता रथ किया रवाना

जागरूकता रथ के माध्यम से जिले भर में लोगो को यातायात नियमों के बारे में किया जायेगा जागरूक

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सड़क सुरक्षा जीवन रक्षा अभियान अंतर्गत पुलिस मुख्यालय भोपाल द्वारा जारी निर्देश के पालन में जिलावासियों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने हेतु रविवार 9 मार्च को कमिश्नर रीवा संभाग रीवा बीएस जामोद, उप पुलिस महानिरीक्षक रीवा क्षेत्र रीवा एवं प्रभारी पुलिस महानिरीक्षक रीवा जोन साकेत प्रकाश पाण्डेय, कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी एवं पुलिस अधीक्षक सीधी डॉ रवींद्र वर्मा द्वारा जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। जागरूकता रथ के माध्यम से सड़क दुर्घटनाओ में कमी लाने एवं यातायात नियमों का शत-प्रतिशत पालन करने सम्बंधी जागरुकता जैसे दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट का उपयोग करे, दो पहिया वाहन पर तीन सवारी न बिठाये, शराब पीकर वाहन न चलाये, वाहन चलाते समय मोबाईल का उपयोग न करे, चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट का उपयोग करने आदि यातायात नियमों के पालन करने की समझाईस दी जावेगी।

पुलिस अधीक्षक डॉ रविन्द्र वर्मा ने कहा कि यातायात नियम आमजन के सुगम एवं सुरक्षित यात्रा हेतु बनाये गए हैं जिसका सभी को पालन करना चाहिए, यातायात नियमों का पालन करवाने हेतु सीधी पुलिस प्रतिबद्ध है।

इस दौरान मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सीधी अरविंद श्रीवास्तव, एसडीएम गोपद बनास नीलेश शर्मा, उप पुलिस अधीक्षक मुख्यालय गायत्री तिवारी, एसडीओपी चुरहट आशुतोष द्विवेदी, एसडीओपी कुसमी रोशनी ठाकुर, रक्षित निरीक्षक रक्षित केंद्र सीधी वीरेंद्र कुमरे, थाना प्रभारी यातायात निरीक्षक रीता त्रिपाठी सहित प्रशासन एवं पुलिस का स्टाफमौजूद रहा।

साथ ही थाना प्रभारी यातायात निरीक्षक रीता त्रिपाठी के नेतृत्व में यातायात पुलिस नें यातायात नियमों की अवहेलना करने वालो पर सख्ती से कार्रवाई की जा रही है। मोटरव्हीकल एक्ट के तहत गलत नंबर प्लेट, अवैध सायरन/हूटर तथा अनधिकृत रूप से लाल पीली एवं नीली बत्ती रंगबिरंगी बत्तियों का उपयोग करने वाले वाहनों एवं नियम विरुद्ध स्टीकर हटाने हेतु थाना प्रभारी थाना यातायात द्वारा मय हमराह स्टाफके शहर के विभिन्न जगहों पर चेकिंग अभियान चलाया गया जिसमें पुराना बस स्टैंड, अस्पताल तिराहा एवं कमर्जी रोड, यशराज पेट्रोल पंप के पास में कार्यवाही की गई।

संपादकीय

बलात्कार और हिंसा पर कब टूटेगी समाज की चुप्पी?

दुनियाभर में प्रतिवर्ष अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाया जाता है, जो सही मायनों में महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक उपलब्धियों का जश्न मनाने वाला एक वैश्विक दिवस है। यह दिन लैंगिक समानता में तेजी लाने के लिए कार्रवाई के आह्वान का भी प्रतीक है। हालांकि चिंता का विषय यही है कि जिस 'आधी दुनिया' के प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए यह दिवस मनाया जाता है, उसी आधी दुनिया को जीवन के हर मोड़ पर भेदभाव या अपराधों का सामना करना पड़ता है। यदि इसे भारत के ही संदर्भ में देखें तो शायद ही कोई दिन ऐसा बीतता हो, जब 'आधी दुनिया' से जुड़े अपराधों के मामले देश के कोने-कोने से सामने न आते हों। होता सिर्फ यही है कि जब भी कोई बड़ा मामला सामने आता है तो हम सिर्फ पुलिस-प्रशासन को कोसने और संसद से लेकर सड़क तक कैंडल मार्च निकालने या अन्य किसी प्रकार से विरोध प्रदर्शन करने की रस्म अदायगी करके शांत हो जाते हैं और पुनः तभी जागते हैं, जब ऐसा ही कोई बड़ा मामला पुनः सुर्खियां बनता है, अन्यथा ऐसी छोटी-मोटी घटनाएं तो आए दिन होती ही रहती हैं। देश में कानूनों में सख्ती, महिला सुरक्षा के नाम पर बीते कुछ वर्षों में कई तरह के कदम उठाने और समाज में 'आधी दुनिया' के आत्मसम्मान को लेकर बढ़ती संवेदनशीलता के बावजूद आखिर ऐसे क्या कारण हैं कि बलात्कार के मामले हों या छेड़छाड़ अथवा मर्यादा हनन या फिर अपहरण अथवा क्रूरता, 'आधी दुनिया' के प्रति अपराधों का सिलसिला थम नहीं रहा है? इसका एक बड़ा कारण तो यही है कि कड़े कानूनों के बावजूद असामाजिक तत्वों पर वो कड़ी कार्रवाई नहीं हो रही है, जिसके वो हकदार हैं और इसके अभाव में हम ऐसे अपराधियों के मन में भय पैदा करने में असफल हो रहे हैं। कहना गलत नहीं होगा कि महज कानून कड़े कर देने से ही महिलाओं के प्रति हो रहे अपराध थमने से रहे, जब तक उनका ईमानदारीपूर्वक कड़ाई से पालन न किया जाए। ऐसे मामलों में पुलिस-प्रशासन की भूमिका भी अनेक अवसरों पर संदिग्ध रहती है। पुलिस किस प्रकार ऐसे अनेक मामलों में पीड़िताओं को ही परेशान करके उनके जले पर नमक छिड़कने का कार्य करती है, ऐसे उदाहरण अक्सर सामने आते रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों के मद्देनजर अपराधियों के मन में पुलिस और कानून का भय कैसे उत्पन्न होगा और कैसे महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों में कमी की उम्मीद की जाए? जरूरत इस बात की महसूस की जाने लगी है कि पुलिस को लैंगिक दृष्टि से संवदेनशील बनाया जाए ताकि पुलिस पीड़ित पक्ष को पर्याप्त संबल प्रदान करे और पीड़िताएं अपराधियों के खिलाफ खुलकर खड़ा होने की हिम्मत जुटा सकें, साथ ही जांच एजेंसियों और न्यायिक तंत्र से भी ऐसे मामलों में तत्परता से कार्रवाई की अपेक्षा की जानी चाहिए। ऐसी घटनाओं पर अंकुश के लिए समय की मांग यही है कि सरकारें मशीनरी को चुस्त-दुरूस्त बनाने के साथ-साथ प्रशासन की जवाबदेही सुनिश्चित करें कि यदि उनके क्षेत्र में महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों के मामलों में कानून का अनुपालन सुनिश्चित नहीं हुआ तो उन पर सख्त कार्रवाई की जाए।

क्रूर एवं आक्रांता मुगल शासक हमारे आदर्श कैसे?

मुगल बादशाह औरंगजेब की रूरता, अत्याचार एवं यातनाएं एक बार फिर बॉलीवुड की फिल्म छावा के कारण सुर्खियों में है। इस बार मामला सिर्फ इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं है बल्कि राजनीति में भी गर्मा गया है। समाजवादी पार्टी के नेता अबू आजमी के बयान ने महाराष्ट्र की राजनीति में उबाल ला दिया है एवं देश के बहुसंय समाज की भावनाओं को आहत किया है। भारत में आज भी एक ऐसा वर्ग है जो इस्लामिक कट्टरता के साथ जुड़ने में गर्व एवं गौरव की अनुभूति करता है, भले ही इससे देश की एकता एवं अखण्डता क्षत-विक्षत होती हो। इस्लाम के नाम पर जिसने हजारों हिंदू मंदिरों को ध्वस्त किया, तलवार की नोक पर बड़ी संया में लोगों को जबरन मुसलमान बनाया, ऐसे रूर एवं सांप्रदायिक शासक औरंगजेब को नेकदिल और महान शासक बताना, आखिर किस तरह की सोच है?

भारत के अतीत को जघन्य अपराधों, कट्टरतावादी सोच एवं यातनाओं से सींचने वाले मुगल शासकों के प्रति यह कैसा मोह एवं ममत्व है? हिन्दू धर्म एवं संस्कृति पर आक्रमण करने वाले हमारे आदर्श कैसे हो सकते हैं? भारत की सांस्कृतिक विरासत एवं समृद्धि को कुचलने वाले महान् शासक कैसे हो सकता है? इन प्रश्नों को लेकर देशभर में छिड़ी बहस हमें आत्मावलोकन एवं मंथन का अवसर दे रही है। फिल्म 'छावा' कोरी फिल्म ही नहीं, हिन्दुओं को संगठित करने का अभियान है, जिसने औरंगजेब के क्रूर एवं बर्बर चरित्र को प्रस्तुत किया है, यह फिल्म मराठा साम्राज्य के दूसरे शासक और छत्रपति शिवाजी महाराज के बड़े बेटे संभाजी महाराज की जिंदगी पर आधारित है। फिल्म में संभाजी के साहस, बलिदान और औरंगजेब के अत्याचारों को दिखाया गया है। संभाजी को औरंगजेब ने छलपूर्वक 1689 में क्रूरता से मरवा दिया था, जिसे फिल्म में भावनात्मक ढंग से पेश करने की सफल एवं सार्थक कोशिश हुई है। इस फिल्म में समाजवादी पार्टी के नेता और महाराष्ट्र विधायक अबू आजमी ने इतिहास को गलत ढंग से पेश करने का आरोप लगाते हुए औरंगजेब की तारीफ करके विवाद को और हवा दे दी। आजमी ने कहा, औरंगजेब क्रूर शासक नहीं था। उसने कई मंदिर बनवाए और उसके शासन में भारत सोने की चिड़िया था। आजमी ने यह भी दावा किया कि औरंगजेब और संभाजी के बीच की लड़ाई धार्मिक नहीं, बल्कि सत्ता की थी। इस तरह मुगल आक्रांताओं की तारीफ करना सपा के डीएनए में है। हो सकता है आजमी का यह औरंगजेब प्रेम एवं मुस्लिम कट्टरतावादी सोच हो, लेकिन औरंगजेब ने संभाजी महाराज को 40 दिनों तक जो यातनाएं दीं, वह क्या थी? उनकी आंखें निकाली गईं, जीभ काटी गई, उनके शरीर को लहूलुहान करके उस पर नमक छिडका और फिर उनकी हत्या कर दी गई, इस तरह क्रूरता एवं बर्बरता बरतने वाले शासक को कैसे आदर्श कहा जाये? असंख्य महिलाओं एवं बच्चों पर अत्याचार करना, जबरन धर्म परिवर्तन कराना, हिन्दू मन्दिरों को तोड़ना, देश की समृद्धि का गलत उपयोग करना कैसे प्रेरणास्पद हो सकता है?

औरंगजेब पोत राज्यों, राजपूताना और मराठा शासकों के परिवारों का अपहरण कर लेता था और उन्हें बंधक बना लेता था। ताकि वह निर्विरोध शासन करते हुए सम्पूर्ण भारत पर आधिपत्य कर सके। उसने सभी गैर-मुस्लिम प्रजा और पोत राज्यों से धार्मिक असहिष्णुता कर जज़िया वसूला। औरंगजेब एक असहिष्णु, क्रूर एवं कट्टरपंथी था और उसकी कट्टरता के कारण करोड़ों लोगों को कष्ट सहना पड़ा। शांति और बहुसंस्कृतिवाद की भूमि भारत में ऐसे अत्याचारी को आदर्श नहीं बनाया जाना चाहिए। यह पहली बार नहीं है जब औरंगजेब जैसे मुगल शासकों के प्रति प्रेम का प्रदर्शन उमड़ा हो, जब दिल्ली की एक सड़क का नाम औरंगजेब रोड से बदलकर एपीजे अब्दुल कलाम के नाम पर रखा गया था, तब भी बहुत हाय-तौबा मचाई गयी थी। उस समय भी अनेक लोगों ने औरंगजेब को महान शासक बताया था। जबकि इतिहासकारों ने भी दर्ज किया है छल से छत्रपति संभाजी को पकड़ने के बाद औरंगजेब ने अत्याचार एवं अमानवीयता की सभी हद पार करते हुए जुल्म किए। औरंगजेब छत्रपति संभाजी को इस्लाम कबूल करने के लिए मजबूर कर रहा था लेकिन छत्रपति ने सब प्रकार के कष्ट सहे लेकिन इस्लाम कबूल नहीं किया। जब फिल्मकार ने इस सच को सिनेमा के माध्यम से सबके सामने रखा तो अबू आजमी ने सच को स्वीकारने की बजाय इतिहास को ही झुठलाने का प्रयास किया। उनके बयान की पक्ष-विपक्ष सबने आलोचना की है। कुल मिलाकर, औरंगजेब की तारीफ करने पर चौतरफा घिरे सपा विधायक अबू आजमी को विधानसभा से निलंबित कर दिया गया। उनके खिलाफ दो एफआईआर भी दर्ज की गई हैं जब मामला और बिगड़ गया तो अबू आजमी ने माफी मांगी। हालांकि, उनका कहना है कि उन्होंने जो कहा, वह इतिहासकारों के हवाले से कहा। लेकिन बड़ा प्रश्न है कि वे कौन से इतिहासकार हैं जिनका हवाला अबू आजमी दे रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि अबू आजमी सरीखे कुछ चाटुकार एवं चारण लोग इतिहासकारों में भी हुए हैं, कांग्रेस के शासन में ऐसे इतिहासकारों से मुगल शासन को महिमामंडित करके लिखवाया गया एवं स्कूली पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाकर हिन्दुस्तान की रग-रग में उतारा गया है। औरंगजेब जैसे तानाशाही शासकों के क्रूर चेहरे को छिपाने के लिए झूठे-सच्चे कुछ किस्सों का सहारा लिया है। परंतु ये फर्जी इतिहासकार सच को छिपा नहीं सके। सिद्धांत, सच और व्यवस्था के आधारभूत मूल्यों को मटियामेट कर सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक स्तर पर कीमत वसूलने की ऐसी कोशिशों से बहुत नुकसान हो चुका है, अब इन मनसूंबों को कामयाब नहीं होने दिया जा सकता। सत्य को ढका जाता रहा है पर स्वीकारा नहीं गया। और जो सत्य के दीपक को पीछे रखते हैं वे मार्ग में अपनी ही छाया डालते हैं, भ्रम पालते हैं, झूठ एवं फरेब के सहारे गलत को सही ठहराने की कुचेष्टा करते हैं। शिवाजी की मृत्यु के बाद उनके बेटे संभाजी ने मराठा साम्राज्य को संभाला। उन्होंने स्वराज्य के संकल्प को ही आकार नहीं दिया बल्कि एक नवीन राज्य निर्मित किया एवं एक नवीन महत्तर महाराष्ट्र को पुनर्जीवित किया। मराठों में साहसिक वीरता, उत्कृष्ट सहनशीलता, घोर निराशा में आशा की भावना, आत्मविश्वास, उच्च आदर्शों के प्रति निष्ठा, श्रेष्ठ सैनिक नैतिक बल, आत्म बलिदान, राष्ट्रीय और देशप्रेम की उत्कृष्ट भावना जैसे गुण विकसित किए और इससे वे इतने शक्तिशाली हो गए कि आगामी 3 पीढ़ियों में वे उत्तरी भारत में विजेता के रूप में पहुंच गए। छत्रपति शिवाजी एवं उनके वंशज देश के अस्तित्व एवं अस्मिता को कुचलने की हर कोशिश को नाकाम करते रहे हैं। औरंगजेब की क्रूरताएं सिर्फ दुश्मनों तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसके शिकार उसके भाई और पिता भी हुए। इतिहासकार इरफान हबीब ने औरंगजेब की क्रूरता के अनेक किस्सों को उजागर करते हुए बताया कि मुगल सत्ता पाने की लालच में औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहां को जेल भिजवाया। फिर दारा शिकोह को जंग में हराया। हालांकि जंग हारने के बाद दारा मैदान छोड़कर भाग गया था। लेकिन औरंगजेब ने दारा को गिरफ्तार करवाया और षडयंत्र रचकर उसकी गर्दन कलम करवा दी। औरंगजेब सिर्फ दारा शिकोह की हत्या से खुश नहीं हुआ। उसने हत्या की बाद क्रूरता की हदें भी पार की। एक भाई के साथ ऐसी क्रूरता भारतीय इतिहास में देखने को नहीं मिलती। उसने दारा का कटा हुआ सिर जेल में बंद पिता को भेजा। मुगल शासक औरंगजेब को लेकर महाराष्ट्र से शुरू हुई बयानबाजी की आंच समूचे देश मे पहुंच गयी है। हिन्दुओं में गहरा आक्रोश एवं रोष है। मांग उठ रही है कि मुगल सम्राट औरंगजेब को बर्बर शासक घोषित किया जाए और भारत में उसके नाम पर रखे गए सभी सड़कों और स्थानों के नाम बदलने के लिए गजट नोटिफिकेशन जारी किया जाए। जैसाकि संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार ने ओसामा बिन लादेन और फ्रांसीसी व रूसी क्रांति के अवशेषों के साथ किया था। किसी भी राष्ट्र एवं समाज का निर्माण इतिहास के सच और ईमानदारी से ही बनता है। और यह सब प्राप्त करने के लिए ईमानदारी के साथ सौदा नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि यह भी एक सच्चाई है कि राष्ट्र, सरकार एवं समाज ईमानदारी से चलते एवं बनते हैं, न कि झूठे इतिहास से। सच को झुठलाना, सच को ढ़कना एवं सच की अनभिज्ञता संसार में जितनी क्रूर है, उतनी क्रूर मृत्यु भी नहीं होती।

हिंदुत्व की समां बंधने से बिहार के सियासी दलों की बेचैनी बढ़ी

बिहार में विधानसभा चुनाव इसी वर्ष अक्टूबर-नवम्बर महीने में होंगे। हालांकि, उससे महीनों पहले राज्य में धार्मिक और राजनीतिक सरगर्मियां तेज हो चुकी हैं। कहीं एनडीए और यूपीए एक दूसरे के खिलाफ ताल ठोकते प्रतीत हो रहे हैं तो कहीं उनके गठबंधन के अपने ही साथी एक-दूसरे को रणनीतिक मात देते हुए अपनी सीटें बढ़ाने को लेकर बेताब नजर आ रहे हैं। इस नजरिए से भाजपा-जदयू की धींगामुश्ती और राजद-कांग्रेस की अंदरूनी कुश्ती के बीच चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी सबके बने बनाए खेल बिगाड़ रही है।

एक तरफ जहां धर्मनिरपेक्ष और सामाजिक न्याय के वोटों का बिखराव तय माना जा रहा है, वहीं हिंदुत्व का नया जनज्वार यहां भी पैदा होती दिखाई दे रही है। इससे जदयू के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार कम, लेकिन पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव और उनके समर्थक ज्यादा परेशान हैं। इस बीच बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री जब अपने हिंदू राष्ट्र के एजेंडे के साथ बिहार पहुंचे, तो रही सही कसर पूरी हो गई। क्योंकि उनका हुर्मुठ धार्मिक अंदाज बिहारियों पर भी अपना छाप छोड़ेगा ही।

उधर, आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत सुपौल में और आर्ट ऑफ लिविंग के श्रीश्री रविशंकर भी पटना में यानी राज्य में मौजूद हैं। इससे धीरेंद्र शास्त्री के गोपालगंज में पांच दिवसीय हनुमंत कथा की समां बंध चुकी है। वहीं, बिहार में हिंदुत्व की समां बंधने से सियासी दलों की बेचैनी भी बढ़ चुकी है। दरअसल, अपने हिंदुत्व का बिगुल फूंकते हुए बागेश्वरधाम सरकार धीरेंद्र शास्त्री ने कहा है कि वह किसी राजनीतिक दल के प्रचारक नहीं बल्कि हिन्दू धर्म के विचारक हैं।

पंडित शास्त्री का यह कहना कि वह अब सनातनियों को झुकने नहीं देंगे, हिंदुओं की आबादी घटने नहीं देंगे, और भारत के पहले ही बहुत टुकड़े हो चुके हैं, इसलिए अब भारत के और टुकड़े होने नहीं देंगे, को सुनकर हिन्दू गदगद हैं। वहीं, पंडित शास्त्री ने सवालिया लहजे में यह पूछकर अपना धार्मिक एजेंडा स्पष्ट कर दिया है कि ईसाइयों के हितचिंतक 95 देश हैं, इस्लामी मतावलंबियों यानी मुसलमानों के हितचिंतक 65 देश हैं, लेकिन हिंदुओं का हितचिंतक कौन देश है? उन्होंने अपनी चिंता प्रकट करते हुए आगे कहा कि भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, नेपाल, भूटान, फिजी, मॉरीशस, सूरीनाम आदि देशों में जो 150 करोड़ हिन्दू हैं, जो दुनिया की तीसरी बड़ी धार्मिक आबादी है, उनका हितचिंतक तो अखंड भारत के ही देशों को होना चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं हो पा रहा है। यदि ये ऐसा नहीं करेंगे तो हम डंके की चोट पर उनसे हिंदुत्व से जुड़े ये कार्य करवाएंगे, लेकिन हिंदुओं का अहित नहीं होने देंगे। उन्होंने दो टूक लहजे में कहा कि हम हिंदुओं के लिए ही जीयेंगे और हिंदुओं के लिए ही मरेंगे। इसलिए हम पूरे भारत में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में घूम-घूम कर हिंदुत्व का अलख जगा रहे हैं।मुझे बिहार के लोगों से ज्यादा उम्मीद है। हिन्दू राष्ट्र की मजबूत हुंकार इसी क्रांतिकारी भूमि से भरी जाएगी। स्वाभाविक है कि बिहार में बागेश्वर धाम सरकार धीरेंद्र शास्त्री का एक धार्मिक नेता वाला अवतार दिखा। इससे पहले वह उड़ीसा, झारखंड, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि राज्यों को भी हिंदुत्व और भारतीयता के लिहाज से जगाते चले आ रहे हैं। पंडित धीरेंद्र शास्त्री ने आगे कहा कि जिंदगी कितनी भी अच्छी हो, यदि इसमें भक्ति ना हो तो वह किसी काम की नहीं। जीवन में भक्त और भक्ति एक दूसरे के बिना सफलता की कामना संभव नहीं है। इसलिए पुरुषार्थ करते रहिए, जीवन में सफलता अवश्य मिलेगी। उन्होंने कहा, जीवन में सबका सम्मान करें। छोटे से छोटे व्यक्ति भी सम्मान के पात्र होते हैं। जीवन के कर्तव्यों के साथ-साथ भक्ति भी जरूरी है। भक्ति के बिना सफल जीवन की कामना बेकार है।

बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर ने कहा, भारत को बंटने नहीं देंगे, हिंदुओं को घटने नहीं देंगे, हम हिंदू राष्ट्र बनाने आए हैं। उन्होंने कथा के दौरान ही कहा, हम किसी पार्टी के प्रचारक नहीं, बल्कि हिंदुत्व के विचारक हैं। यह देश हमारा है, यह बिहार हमारा है। हम हिंदुत्व जगाने आए हैं। हिंदू राष्ट्र बनाने आए हैं। उन्होंने दुनिया में अलग-अलग देश में रह रहे अलग-अलग समुदाय के साथ हिंदुत्व पर चर्चा करते हुए भारतवर्ष को एक महान राष्ट्र बताया। उन्होंने कहा, हम हिंदू को एकजुट करने आए हैं। आप हमें रामनगर में जब तक रखेंगे हम तब तक रहेंगे। पांच

दिवस ही क्या, पांच महीने तक हम हिंदुत्व के लिए कथा करते रहेंगे। विदेश से भी श्रद्धालु कथा का श्रवण करने पहुंचे हैं। इससे बागेश्वरधाम सरकार श्री शास्त्री की लोकप्रियता और भी परवान चढ़ने लगीहै।

चूंकि बिहार राज्य में इस साल विधानसभा चुनाव होने वाले हैं, जिसको लेकर सभी दलों ने जोर आजमाइश भी शुरू कर दी है। इस लिहाज से मार्च के पहले-दूसरे सप्ताह में, वो भी होली से ठीक पहले बिहार में एक साथ आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत, बागेश्वर सरकार धीरेंद्र शास्त्री और आर्ट ऑफ लिविंग के संस्थापक श्रीश्री रविशंकर का दौरा करना महत्वपूर्ण है। इससे सामाजिक न्याय और धर्मनिरपेक्षता के लिहाज से सजग रहे बिहार में हिंदुत्व का एक नया उफान पैदा होगा, जिससे सूबे में भाजपा की जड़ें और मजबूती से जमेंगी।

चूंकि उड़ीसा विधानसभा चुनाव में जीत चुकी भाजपा झारखंड विधानसभा चुनाव में मुंहकी खा चुकी है। इसलिए आगामी बिहार विधानसभा चुनाव को वह हर हाल में जीतना चाहती है। चूंकि वह यहां पर जदयू के साथ चुनाव लड़ती आई है, इसलिए वह विपक्षी पार्टी राजद और कांग्रेस को इतना कमजोर कर देना चाहती है कि उसके सहयोग से जदयू पुरानी बारगेनिंग करने लायक नहीं बचे। इसलिए वह इस बार जदयू की सीटों की संख्या को भी कतरने का मन बना चुकी है। यह सबकुछ करना इसलिए बेहद जरूरी है कि 2026 के पूर्वार्द्ध में ही पश्चिम बंगाल विधानसभा के चुनाव भी होने वाले हैं। जहां चुनाव जीतना दिल्ली के बाद मोदी सरकार की हिट लिस्ट में है।

समझा जाता है कि एक के बाद एक यानी हरियाणा, महाराष्ट्र और दिल्ली जैसी मुश्किल विधानसभा चुनावों में अपनी जीत का परचम लहरा चुकी भाजपा अब बिहार में भी वही प्रयोग करने जा रही है। आरएसएस और अपनी आनुषंगिक इकाइयों के माध्यम से वह जन जन को साधना चाहती है, ताकि नीतीश कुमार पर मनोवैज्ञानिक दबाव बना रहे और सीटों के बंटवारे में वो कम सीट पर चुनाव लड़ने को राजी हो जाएं। वहीं, यदि इसमें को अप्रत्याशित बाधा भी आए तो राज्य में हिंदुत्व की लहर इतनी प्रचंड हो जाए कि धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय जैसी जातिवादी और धार्मिक सोच हवा-हवाई हो जाए।

यही वजह है कि गोपालगंज में बागेश्वर सरकार धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री के 5 दिवसीय हनुमंत कथा के आयोजन से मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और पूर्व मुख्यमंत्री राजद नेता तेजस्वी यादव की सियासी नींद उड़ चुकी है। वहीं, प्रयागराज महाकुंभ के बाद भाजपा की राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय हवा बनी है, उससे भी ये नेता भीतर ही भीतर परेशान हैं।तेजस्वी यादव और उनके समर्थक तो इस आयोजन को लेकर उटपटांग बयानबाजी भी तेज कर चुके हैं।

वहीं, बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद के गृह जनपद गोपालगंज के भोरे प्रखंड के रामनगर स्थित श्रीराम जानकी मठ इन दिनों हिंदुत्व व सनातनियों की आस्था का केंद्र बना हुआ है। यहां भारी संख्या में श्रद्धालु धीरेंद्र शास्त्री की कथा सुनने के लिए पहुंचे हुए हैं। इस श्रीराम जानकी मठ में धीरेंद्र शास्त्री ने कथा से पहले हिन्दुओं के अस्तित्व और उनकी सुरक्षा को लेकर बहुत बड़ा बयान दिया है। गुरुवार की देर शाम कथा वाचक धीरेंद्र शास्त्री ने कहा कि वे यहां अपने लिए थोड़े आए हैं, वे इस देश के हिन्दुओं को जगाने के लिए आए हैं।

पिकअप पलटने से 2 मौत, 5 गंभीर

मरने वालों में 8 साल की बच्ची और महिला, शादी में जा रहा था साहू परिवार

मीडिया ऑडीटर, कवर्धा (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के कवर्धा जिले में तेज रफ्तार पिकअप बेकाबू होकर पलट गई। हादसे में 2 लोगों की मौत हो गई। महिला और बच्चों समेत 25 लोग घायल हो गए हैं। इसमें से 8 साल की बच्ची समेत 5 लोगों की हालत गंभीर बनी हुई है। घटना सिटी कोतवाली थाना इलाके के पलानी पाट के पास की है।

जानकारी के मुताबिक, सभी लोग हाथीडोब सिंघनपुरी के साहू परिवार के हैं। नवविवाहित बेटी के ससुराल में शादी की चौथी कार्यक्रम में शामिल होने शनिवार शाम को पिकअप में 40 से ज्यादा लोग सवार होकर लोहारा की ओर जा रहे थे।

घायलों का जिला अस्पताल में चल रहा इलाज: लोहारा जाने के दौरान पलानी पाट के पास गाड़ी बेकाबू होकर पलट गई। वहीं, इलाज के दौरान उर्वशी साहू (14 साल) और मुखीन बाई साहू की मौत हो गई है। सूचना मिलते ही थाना प्रभारी लालजी सिन्हा अपनी टीम और एम्बुलेंस के साथ मौके पर पहुंचे। सभी घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां इलाज जारी है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

विधायक समेत कई नेताओं ने घायलों से की मुलाकात: वहीं, घटना की सूचना मिलते ही पंडरिया विधायक भावना बोहरा, नगरपालिका अध्यक्ष चंद्रप्रकाश चन्द्रवंशी, निर्वाचित जनप्रतिनिधि जिला पंचायत अध्यक्ष ईश्वरी साहू, उपाध्यक्ष कैलाश चन्द्रवंशी तत्काल जिला अस्पताल पहुंचे, जहां घायलों से मुलाकात की।

सूरजपुर में भी हादसे में 2 की मौत: सूरजपुर जिले में भी शनिवार सुबह सड़क हादसे में 2 लोगों की मौत हो गई। शिवपुर तिराहा के पास एक बोलेरो वाहन अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पेड़ से टकरा गई। घटना में बोलेरो के चालक और एक अन्य व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई।

मामला प्रतापपुर थाना क्षेत्र का है। बोलेरो में 3 लोग सवार थे। पीछे बैठी एक महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। घायल महिला को प्रतापपुर स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया है। उसकी हालत अभी नाजुक बनी हुई है।

कवर्धा में 2024 में भी पिकअप खाई में गिरी थी, 19 की मौत: बता दें कि, 20 मई 2024 को तेज रफ्तार पिकअप पलटकर 20 फीट गहरे गड्ढे में गिर गई थी। हादसे में 19 लोगों की मौत हो गई थी। हादसा कुकदूर थाना क्षेत्र के बाहपानी गांव के पास हुआ था। मरने वालों में 18 महिलाएं थी। इनमें मां-बेटी सहित 3 बच्चियां भी थी। हादसे के दौरान पिकअप में 25 लोग सवार थे। सभी लोग तेंदूपत्ता तोड़कर गांव लौट रहे थे।

कलयुग का कल्कि अवतार बताने वाला गिरफ्तार

अवैध संबंध में बुजुर्ग को मार डाला, फिर 5 की हत्या की दी धमकी,दहशत में थे लोग

मीडिया ऑडीटर, कोरबा (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में कोरबा जिले के उरगा थाना क्षेत्र के नावापारा गांव में खुद को कलयुग का कल्कि अवतार बताने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। हत्या की वजह अवैध संबंध है। दरअसल, आरोपी रामसिंह कंवर के बेटे की हत्या करने आया था, लेकिन जगदीश कंवर नहीं मिलने पर उसने उसके पिता की हत्या कर दी। आरोपी ने फिल्म "कल्की के अवतार" देखकर हत्या की साजिश रची थी।

अवैध संबंधों के चलते की गई थी हत्या: दरअसल, 23 फरवरी की रात नावापारा गांव निवासी 56 वर्षीय रामसिंह कंवर घर के बाहर चबूतरे पर सो रहे थे, तभी अज्ञात हमलावर ने उन पर धारदार हथियार से हमला कर दिया। वारदात के बाद आरोपी ने घर की दीवार पर रामसिंह के बेटे जगदीश कंवर के नाम धमकी भरी चिट्ठी लिखी और फरार हो गया। गंभीर रूप से घायल रामसिंह को कोरबा के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई।

हत्या के अगले दिन आरोपी ने फिर से दीवारों पर पांच और लोगों की धमकी दी थी, जिससे गांव में दहशत फैल गई। इतना ही नहीं, रामसिंह की अंत्येष्टि के अगले दिन मुक्तिधाम में तलवार और एक और धमकी भरी चिट्ठी छोड़कर आरोपी ने सनसनी फैला दी। इस घटना के बाद गांववाले काफी डर गए। इधर, पुलिस के लिए भी यह मामला एक चुनौती बन गया था।

26 सदस्यीय टीम ने आरोपी को पकड़ा: कोरबा एसपी सिद्धार्थ तिवारी ने मामले का खुलासा करते हुए बताया कि घटना के बाद 26 सदस्यीय टीम बनाकर पुलिस ने सभी संभावित पहलुओं पर जांच की। जांच के दौरान पता चला कि मृतक रामसिंह के बेटे जगदीश कंवर के गांव की एक महिला के साथ अवैध संबंध थे। इसी महिला से जांजगीर-चांपा जिले के सिवनी निवासी 26 वर्षीय विकास यादव के भी संबंध रहे थे।

जब पुलिस ने विकास यादव से पूछताछ की, तो उसने अवैध संबंधों के चलते हत्या करने की बात कबूल कर ली। आरोपी ने बताया कि उसे पसंद नहीं था कि जगदीश उस महिला के साथ संबंध रखे। इसी के बाद विकास ने जगदीश को जान से मारने का मन बना लिया था। आरोपी जगदीश की हत्या के मकसद से उसके घर गया था, लेकिन वह नहीं मिला, तो उसने गुस्से में उसके पिता रामसिंह पर हमला कर दिया और दीवार पर धमकी भरी चिट्ठी लिखकर फरार हो गया।

पुलिस को गुमराह करने के लिए रचता था साजिश: आरोपी पुलिस को भ्रमित करने के लिए बार-बार दीवारों पर लिखकर धमकी देता था, ताकि शक किसी और पर जाए और पुलिस उसे पकड़ न सके। पुलिस की पूछताछ में यह भी सामने आया कि आरोपी मीडिया की खबरों पर भी नजर बनाए हुए था और उसी के आधार पर अपनी अगली चाल चलता था।

फिल्म से मिली हत्या की प्रेरणा: आरोपी विकास ने "कल्कि के अवतार" फिल्म देखकर जगदीश की हत्या की पूरी प्लानिंग कर चुका था। उसने पुलिस को बताया कि वारदात के बाद वह बार-बार गांव जाता था यह देखने कि लोग डरे हैं या नहीं, और माहौल कैसा है। लेकिन उसे इस बात का अंदाजा नहीं था कि पुलिस उसकी हर हरकत पर नजर रख रही है और जल्द ही वह पुलिस के जाल में फंस जाएगा।

आरोपी को पकड़ने पुलिस ने गांव में डाला था डेरा: पुलिस टीम ने गांव में डेरा डाल दिया था, रातभर वहीं सोती थी और ग्रामीणों से लगातार पूछताछ कर रही थी। आखिरकार, कड़ी मेहनत के बाद पुलिस को सफलता मिली और आरोपी गिरफ्तार कर लिया गया। कोरबा एसपी सिद्धार्थ तिवारी ने बताया कि आरोपी को पकड़ने वाली पुलिस टीम को आईजी साहब ने बधाई दी है और उन्हें इनाम के लिए पत्र भेजा गया है।

हाईवे पर ट्रक हादसा, ड्राइवर की मौत

रॉन्ग साइड में खड़े ट्रेलर से टकराया ट्रक, ब्रेक फेल होने पर खड़ा था ट्रेलर

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर में मुढीपार टोल प्लाजा के पास शुक्रवार रात एक बड़ा सड़क हादसा हुआ है। रायगढ़ से नागपुर जा रहा ट्रक (सीजी 04 एमएल 9332) रॉन्ग साइड पर खड़े ट्रेलर से टकरा गया। हादसे में ट्रक ड्राइवर जनक सिंह की मौके पर ही मौत हो गई।

टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि, ट्रक का केबिन पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। चालक का शव बाहर निकालने के लिए क्रेन की मदद लेनी पड़ी। हादसे के बाद ट्रेलर ड्राइव मौके से फरार हो गया था। बिल्हा पुलिस ने उसे बाद में गिरफ्तार कर लिया।

बिल्हा थाना प्रभारी उमेश साहू ने बताया कि ट्रेलर (सीजी 15 एसी 2168) ब्रेक फेल होने के कारण गलत दिशा में खड़ा था। पुलिस ने ट्रेलर चालक के खिलाफ धारा 106(1)-बीएनएस के तहत मामला दर्ज किया है। जांच जारी है।

महिलाओं से भरी बस टैंकर से जा टकराई, 14 घायल

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम से लौट रही थीं सभी, जिला अस्पताल में भर्ती

मीडिया ऑडीटर, दुर्ग (एजेंसी)। दुर्ग जिले में एक सड़क हादसे में 14 महिलाएं घायल हो गई। शनिवार शाम एक बस अनियंत्रित होकर दूसरी गाड़ियों सहित टैंकर से जा टकराई। बस में 34-35 महिलाएं सवार थीं, जो अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम से लौट रही थीं।

मोहन नगर थाना क्षेत्र का मामला है। बायपास रोड में झरोखा पैलेस के सामने यह घटना हुई। सभी घायलों को उपचार के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, राजधानी रायपुर के साइंस कॉलेज मैदान में महिला बाल विकास विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया था जिसमें दुर्ग जिले की 34-35 महिलाएं शामिल होने गई थी, वापसी के दौरान यह हादसा हुआ।

तुरंत राहत एवं बचाव कार्य किया गया: बस ड्राइवर को भी काफी चोट आई है। हादसे की सूचना मिलते ही मोहन नगर पुलिस मौके पर पहुंची और लोगों की मदद से राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया। घायलों को प्राथमिक उपचार के लिए जिला अस्पताल दुर्ग ले जाया गया।

सभी घायल खतरे से बाहर: सूचना मिलते ही जिला प्रशासन और चिकित्सा विभाग सक्रिय हो गया। जिला अस्पताल में चिकित्सकों की टीम ने तुरंत सभी घायलों का इलाज शुरू कर दिया। डॉक्टर के मुताबिक सभी 14 घायल महिलाएं खतरे से बाहर हैं। किसी को गंभीर चोटें नहीं हैं। प्रशासन घायलों के स्वास्थ्य की लगातार निगरानी कर रहा है।

ये लोग हुए घायल: सरोज चौहान पति ठाकुर राम चौहान (60 साल), निवासी नगपुरा

माना महतो पति स्व. चंद्रा जी (56 साल), निवासी नगपुरा

रोशनी देशमुख पति कुलभूषण देशमुख (25 साल), निवासी बेलौदी

रौनक देशमुख पिता कुलभूषण देशमुख (5 साल), निवासी बेलौदी

योगेश्वरी विश्वकर्मा पति योगेश विश्वकर्मा (37 साल), निवासी ढाबा अंजोरा

पदमा साहू पति खेमलाल साहू (47 साल), निवासी ढाबा अंजोरा

पूर्णिमा देशमुख पति स्व. रोमन देशमुख (37 साल), निवासी समोदा नगपुरा

बहरिन बाई देशमुख पति कमल नारायण,

चंद्रिका साहू पति रवींद्र कुमार (36 साल), निवासी नगपुरा

शानु वर्मा पति रामकुमार वर्मा (55 साल), निवासी अंजोरा ढाबा

कुसुम ठाकुर पति निर्मल ठाकुर (30 साल), निवासी बेलौदी

रवि चंद्राकर पिता रामफल चंद्राकर (32 साल), निवासी शंकर नगर दुर्ग

शशिकला सिंह पति भगवानी सिंह (43 साल), निवासी नगपुरा

दानेश्वरी पारकर पिता नरोत्तम पारकर (15 साल), निवासी बेलौदी

अफेयर के शक में देवर ने की भाभी की हत्या

खाट पर बंधी मिली लाश, प्रेम-प्रसंग में तीसरे की एंट्री पर मार डाला

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में देवर ने भाभी की हत्या कर दी। खाट पर महिला की बंधी हुई लाश मिली है। वारदात के बाद देवर ने अपनी बेटी को कॉल कर कहा कि, तुम्हारी बड़ी मां ने गलत किया। इसलिए उसे मार डाला। अब वो आत्महत्या कर लेगा। उसकी तलाश मत करना। घटना सीपत थाना इलाके की है। बताया जा रहा है कि, पुलिस ने आरोपी को हिरासत में ले लिया है। पुलिस सूत्रों से पता चला है कि, आरोपी ने पूछताछ में कहा है कि, उसका भाभी के साथ अफेयर था, लेकिन महिला का किसी और से अवैध संबंध भी था। इसलिए दोनों के बीच विवाद होने पर उसे मार दिया।

जानिए क्या है पूरा मामला: सीपत थाना प्रभारी गोपाल सतपथी ने बताया कि, खैरा गांव की रहने वाली राजकुमारी बर्मन (38) की शादी तेलसरा में रहने वाले रामलाल बर्मन से हुई थी। करीब 8 साल पहले महिला अपने पति और बच्चों को लेकर मायके में रहने लगी। उसने अपना अलग मकान भी बना लिया। लेकिन सालभर पहले रामलाल की सड़क हादसे में मौत हो गई।

महिला से उसके घर मिलने गया था सूरज: शुक्रवार को महिला का देवर सूरज बृजवासी घर आया था। दोपहर को बच्चे स्कूल चले गए। तब वो घर पर ही था। जब स्कूल से बच्चे घर आए, तो उनकी मां का शव खाट पर बंधा हुआ था। उसके गले में गमछा बंधा था। बच्चों ने इसकी जानकारी आसपास के लोगों को दी। सूचना मिलने पर पुलिस की टीम भी घटना स्थल पर पहुंची।

बेटी को कॉल कर दी हत्या की जानकारी: शुरुआती पूछताछ में पता चला कि, सूरज ने अपनी बेटी को कॉल किया था। उसने अपनी बेटी से कहा कि, तुम्हारी बड़ी मां ने गलत किया था। इस कारण उसकी हत्या कर दी है। अब मैं भी आत्महत्या कर लूंगा। मेरी तलाश मत करना। फिर फोन काट दिया।

दोस्त से भी मोबाइल पर हुई बात: महिला की हत्या के बाद सूरज ने अपने एक दोस्त को भी कॉल किया था। उसने दोस्त से कहा कि, वह उससे आखिरी बार बात कर रहा है। इसके बाद उसके पास कोई कॉल नहीं आएगा। दोस्त ने जब उससे बात करनी चाही तो कॉल डिस्कनेक्ट कर दिया। फिलहाल, पुलिस मामले की जांच कर रही है।

धर्मांतरण को लेकर हंगामा-तोड़फोड़

एक घर में जमा थे 100 से ज्यादा लोग, बजरंग दल ने किया विरोध, पुलिस बल तैनात

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। राजधानी में रायपुर में रविवार को धर्मांतरण को लेकर जमकर बवाल हुआ। टाटीबंध में धर्म परिवर्तन के आरोप में बजरंग दल ने जमकर तोड़फोड़ और हंगामा किया है। बजरंग दल का आरोप है कि, एक घर में करीब 100 से ज्यादा लोग जमा थे। जिनका धर्मांतरण कराया जा रहा था। इसकी सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में बजरंग दल कार्यकर्ता मौके पर पहुंचकर इसका विरोध जताया। इसी दौरान विवाद हो गया। पुलिस ने हंगामे की सूचना पर पहुंचकर विवाद को शांत कराया। घटना आमानाका थाना इलाके के टाटीबंध स्थित अनुकम्पा नगर की है।

धर्मांतरण की मिली थी शिकायत: इस मामले में बजरंग दल के जिला अध्यक्ष योगेश सैनी ने बताया कि, आसपास के गांव वालों ने हमें धर्मांतरण की शिकायत दी। उनके परिवार के कई सदस्यों का धर्मांतरण करवाया गया है। इसके बाद हम मौके पर पहुंचे। टाटीबंध के पास एक घर के भीतर करीब 100 से ज्यादा लोग मौजूद थे। भीतर में धर्मांतरण चल रहा था। कार्यकर्ताओं ने घर को घेर लिया।

पुलिस से सख्त एक्शन की मांग: इस हंगामे की सूचना मिलते ही मौके पर आमानाका पुलिस समेत भारी संख्या में पुलिस बल को तैनात किया गया। पुलिस ने बीच बचाव कर हंगामा को शांत कराया। हंगामे के दौरान घर के भीतर जमकर तोड़फोड़ भी हुई है। इस मामले में बजरंग दल की मांग है कि, धर्मांतरण करने वाले दोषियों के खिलाफ सख्त एक्शन किया जाए। फिलहाल पुलिस दोनों पक्षों से बातचीत कर मामले की जांच कर रही है।

जांच में जुटी पुलिस: आमानाका थाना प्रभारी सुनील दास का कहना है कि, हमें एक घर में हंगामे की सूचना मिली थी। अधिकारियों के निर्देश पर मौके पर पहुंचकर मामला शांत करवाया गया है। अब इस मामले में प्रारंभिक जांच पड़ताल के आधार पर पुलिस एफआईआर दर्ज कर रही है।

क्लब में नाबालिगों को शराब परोसने पर भी बवाल: रायपुर में शनिवार देर रात तक क्लब में शराब परोसने की सूचना मिलने पर भी विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के कार्यकर्ता पहुंचे थे। उनका आरोप है कि, हाइपर क्लब सहित वीआईपी रोड के अन्य क्लब में नाबालिगों को शराब परोसी जा रही थी। बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने विरोध किया जिसके बाद पुलिस ने मौके पर पहुंचकर मामले को शांत करवाया। इस मामले में कार्यकर्ताओं ने पुलिस से दोषियों के खिलाफ एक्शन लेने की मांग की है।

क्रेटा कार में गांजा की तस्करी

ओडिशा से लाया 60 किलो गांजा, मकान में छिपाकर रखा, 2 आरोपी गिरफ्तार

मीडिया ऑडीटर, रायगढ़ (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ में ओडिशा से गांजा लाकर खपाने वाले 2 तस्करों को पुलिस ने पकड़ा है। जिसमें कटखरा बैस्कीमुड़ा निवासी केशव यादव (29) और चिटकानारा निवासी नत्थु उर्फ लुंदरोराम यादव (35) शामिल हैं। उनके पास से 22 किलो गांजा भी जब्त किया गया है। मामला लैलूंगा थाना क्षेत्र का है।

पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि दोनों 1 मार्च को ओडिशा के रेडाखोल बौध क्षेत्र से 60 किलो गांजा खरीदकर लाए हैं। अपनी क्रेटा कार से गांजा लाकर इसकी बिक्री कर रहे हैं। अब तक करीब 38 किलो गांजा को उन्होंने बेच दिया है। बाकी 22 किलो गांजा को ग्राम सोनाजोरी स्थित नवनिर्मित मकान में छिपाकर रखा है।

घेराबंदी कर आरोपियों को पकड़ा: जिसके बाद साइबर सेल और पुलिस की संयुक्त टीम ने तत्काल मौके पर दबिश देते हुए घेराबंदी कर केशव और उसके साथी नत्थू को धरदबोचा। उनसे पूछताछ और जांच में पुलिस को मकान में छिपाकर रखे 22 किलो गांजा मिला। पुलिस ने गांजा, क्रेटा कार, एक बाइक और दो मोबाइल जब्त कर लिया है।

कुल 21 लाख की संपत्ति जब्त: पुलिस ने बताया कि, गांजा समेत 21.50 लाख की संपत्ति जब्त की गई है। केशव से पूछताछ करने पर पता चला कि, गांजा बिक्री के मुनाफे से क्रेटा कार और सोनाजोरी और रूडेकेला में करीब 51 लाख की जमीन खरीदी है। फिलहाल पुलिस मामले में आगे की जांच कर रही है।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर सैकड़ों शिक्षक सड़क पर उतरे

सरकार पर लगाया अन्याय का आरोप, बोले- नौकरी के बदले नौकरी चाहिए

मीडिया ऑडीटर, भिलाई (एजेंसी)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर दुर्ग जिले के सुपेला में सहायक शिक्षकों ने प्रदर्शन किया। नौकरी से निकाले गए सैकड़ों शिक्षकों ने सड़कों पर उतरकर सरकार के खिलाफ रैली निकाली और नारेबाजी की। प्रदर्शन के दौरान शिक्षकों ने हाथों में तख्तियां और बैनर लेकर सरकार के फैसले का विरोध किया। उनकी मांग थी कि सरकार केवल कमेटी बनाने की बात न करे, बल्कि ठोस निर्णय ले। प्रदर्शनकारियों के हाथ में जो बैनर थे, उनमें लिखा था 'कमेटी नहीं, कमिटमेंट चाहिए, नौकरी के बदले नौकरी चाहिए'।

सहायक शिक्षकों को अचानक नौकरी से निकाला: सहायक शिक्षकों ने आरोप लगाया कि छत्तीसगढ़ की साय सरकार ने उनके साथ अन्याय किया है। वो लोग अपनी नौकरी वापस पाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं और आर्थिक संकट से जूझ रहे हैं। वे पूरी तरह से बेरोजगार हो गए हैं। उनके परिवार का गुजर-बसर करना मुश्किल हो गया है। एक प्रदर्शनकारी शिक्षक ने कहा हमने पूरी ईमानदारी से अपनी सेवाएं दीं। डेढ़ साल तक बच्चों को पढ़ाया, लेकिन अचानक हमें नौकरी से निकाल दिया गया। हम सरकार से मांग करते हैं कि हमारी बहाली की जाए। हमारा परिवार अब भुखमरी के कगार पर है।

क्या है पूरा मामला: सहायक शिक्षक पूर्णिमा ने बताया कि छत्तीसगढ़ में सहायक शिक्षकों की नियुक्ति 2023 में की गई थी। ये शिक्षक बी.एड. प्रशिक्षित थे और बस्तर तथा सरगुजा संभाग में पिछले डेढ़ साल से कार्यरत थे। 1 जनवरी 2025 को साय सरकार ने सभी 2900 सहायक शिक्षकों को नौकरी से बाहर कर दिया है। सरकार का कहना है कि यह निर्णय कोर्ट के आदेश के तहत लिया गया है। सरकार ने शिक्षकों को यह कहकर आश्वासन दिया था कि इस मुद्दे पर विचार करने के लिए एक कमेटी गठित की गई है और जल्द ही निर्णय लिया जाएगा। लेकिन डेढ़ महीने बीत जाने के बाद भी कोई ठोस समाधान नहीं निकला। इससे शिक्षकों में आक्रोश है।

अनिश्चितकालीन आंदोलन की चेतावनी: प्रदर्शन के दौरान नौकरी से निकाले गए शिक्षकों ने सरकार पर कई आरोप लगाए। सहायक शिक्षक निशांत वर्मा ने आरोप लगाया कि यह केवल समय टालने की रणनीति है और सरकार उनकी मांगों को गंभीरता से नहीं ले रही है। सहायक शिक्षकों ने ऐलान किया है कि अगर जल्द ही कोई समाधान नहीं निकला तो वे अनिश्चितकालीन आंदोलन करेंगे। उनका कहना है कि वे तब तक संघर्ष जारी रखेंगे, जब तक उनकी नौकरी बहाल नहीं होती।

झगराखण्ड एसईसीएल सबएरिया में अवैध कब्जाधारियों पर प्रशासन सख्त

खाली कराने की प्रक्रिया होगी तेज

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। कलेक्टर डी. राहुल वेंकट के निर्देशानुसार झगराखण्ड एसईसीएल सबएरिया में अवैध रूप से रह रहे परिवारों को हटाने की प्रक्रिया तेज कर दी गई है। एसईसीएल प्रबंधन द्वारा लगातार नोटिस जारी किए जा रहे हैं, जिसके तहत अवैध कब्जाधारियों को अपने मकान खाली करने के निर्देश दिए गए हैं। प्रबंधन द्वारा जारी नोटिस के बाद जिला प्रशासन, एसईसीएल प्रबंधन और नगर पंचायत संयुक्त रूप से कार्यवाही करेंगे। कार्यालयीन अवधि में अवैध मकानों को खाली कराकर वैध आवंटन की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि यह कार्रवाई प्रशासनिक आदेशों के तहत हो रही है और इसे शीघ्र ही पूरा किया जाएगा। एसईसीएल प्रबंधन ने स्थानीय निवासियों से अपील की है कि वे निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार सहयोग करें, ताकि क्षेत्र में सुव्यवस्थित आवासीय व्यवस्था बनाई जा सके।

तेंदुपत्ता संग्रहण कार्यशाला जनकपुर में अग्निसुरक्षा और संग्रहण प्रक्रिया पर विशेष प्रशिक्षण

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। मनेंद्रगढ़ जिला यूनियन द्वारा 7 मार्च 2025 को जनकपुर स्थित निरीक्षण कुटीर परिसर में तेंदुपत्ता शाखकर्तन सह संग्रहण एवं अग्निसुरक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में भरतपुर-सोनहत विधानसभा की विधायक रेणुका सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहीं और शासन की विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी। कार्यशाला में उप प्रबंध संचालक मनेंद्रगढ़, उप वन मंडलाधिकारी जनकपुर, संचालक मंडल की अध्यक्ष एवं सदस्यों ने 10 प्राथमिक वनोपज सहकारी समितियों के प्रबंधकों और तेंदुपत्ता संग्राहकों को शाखकर्तन, फड़ चयन, संग्रहण, उपचारण, बोराभर्ती, परिवहन और गोदामीकरण की प्रक्रिया को विस्तार से समझाया। इसके बाद फील्ड में शाखकर्तन कार्य का प्रदर्शन किया गया, जिससे उपस्थित प्रशिक्षणार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त हुआ।

बीएमडब्ल्यू सवार युवक ने बीच सड़क पेशाब किया, गिरफ्तार

पुणे (एजेंसी)। पूणे के येरवडा इलाके में शनिवार को बीएमडब्ल्यू सवार एक युवक ने बीच सड़क कार खड़ी कर डिवाइडर पर पेशाब कर दिया। घटना का वीडियो सामने आया है, जिसमें एक युवक लग्जरी बीएमडब्ल्यू कार से उतरता है, ट्रैफिक जंक्शन पर खुलेआम पेशाब करता है। इसके बाद युवक मुस्कुराते हुए गाड़ी में बैठकर फरार हो जाता है। घटना के दौरान किसी राहगीर ने ये वीडियो बनाया। इस दौरान दोनों युवक मुस्कुराते दिख रहे हैं। वीडियो की जानकारी मिलने के बाद पुलिस ने आरोपियों की तलाशी शुरू की। कुछ ही देर में पेशाब करने वाले युवक के साथ मौजूद उसके दोस्त को गिरफ्तार कर लिया गया। रविवार को मुख्य आरोपी भी पकड़ा गया। पुणे पुलिस के मुताबिक कार में बैठा युवक का साथी भाग्येश ओसवाल था, जबकि पेशाब करने वाला गौरव आहूजा। भाग्येश को पूणे से और गौरव को सतारा के कराड से गिरफ्तार किया गया है। दोनों आरोपी नशे में थे। वीडियो में भाग्येश के हाथ में बीयर की बोतल भी दिख रही है। दोनों को आज कोर्ट में पेश किया जाएगा।

चुनाव में मुफ्त की रेवड़ियों के वादे से बचेगी भाजपा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाजपा अब चुनाव के दौरान मतदाताओं को लुभाने के लिए मुफ्त की घोषणाओं (फ्रीबीज) पर ब्रेक लगाने की तैयारी में है। पार्टी ने फ्रीबीज की जगह वैकल्पिक मॉडल तैयार किया है। इसमें खाते में सीधे कैश ट्रांसफर या अन्य छूट (नॉन परफॉर्मिंग एक्सपेंडिचर) की जगह कामकाज को बढ़ाने और ऐसे मदों के लिए आर्थिक मदद की घोषणा होगी, जिससे राज्य की जीडीपी को गति मिले। नए मॉडल की शुरुआत 2026 में होने वाले असम विधानसभा चुनाव से होगी। भाजपा यह व्यवस्था उन्हीं राज्यों में लागू करेगी, जहां पार्टी खुद सरकार में है या मुख्य विपक्षी दल की भूमिका में है या जहां अपने दम पर चुनाव लड़ेगी। जहां पहले से फ्रीबीज की घोषणा हो चुकी है या पार्टी ने जिसका वादा किया है, वह जारी रहेगा, पर अगले चुनाव में वहां भी नया मॉडल लागू होगा। यानी 2028 के बाद भाजपा शासित सभी राज्यों में यह व्यवस्था होगी। भाजपा की कई मेनिफेस्टो कमेटी से लंबे समय से जुड़े रहने वाले एक वरिष्ठ नेता ने बताया कि दिल्ली चुनाव के दौरान ही शीर्ष नेतृत्व ने अगले चुनावों में फ्रीबीज का वैकल्पिक मॉडल अपनाने के लिए रणनीति बनाने का विचार रखा था।

जम्मू-कश्मीर में बर्फबारी-बारिश थमी, तापमान बढ़ा

जम्मू/भोपाल/नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में बर्फबारी का दौर फिलहाल थम गया है। प्रशासन ने सड़कों पर जमीं बर्फ हटाई, जिससे रास्ते खुल सकें। इसके साथ ही जम्मू-कश्मीर के तापमान में भी वृद्धि हुई है। हिमाचल प्रदेश में 10 मार्च से मौसम बदलेगा। एक हफ्ते तक पहाड़ों पर बर्फबारी होगी। जम्मू-कश्मीर के साथ उत्तराखंड में लैंडस्लाइड व बर्फ के पहाड़ खिसक सकते हैं। मध्य प्रदेश में बर्फीली हवाओं का असर घटने लगा है। दिन का पारा 36एष्ट के पार पहुंच गया है। मौसम विभाग के मुताबिक 15 मार्च के बाद तेजी से गर्मी बढ़ेगी। बीते चार दिन में रात का पारा 6एष्ट तक पहुंचा था।

माँ नर्मदा के संपूर्ण परिक्रमा पथ को पवित्रता के साथ उसके मूल स्वरूप में स्थापित करने के लिए सरकार है दृढ़ संकल्पित-मुख्यमंत्री

भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव रविवार को ओंकारेश्वर में ब्रह्मपुरी घाट पर आयोजित अमृतस्य मां नर्मदा पद परिक्रमा कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने ब्रह्मपुरी घाट पर माँ नर्मदा की पूजा-अर्चना की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि ओंकारेश्वर में भव्य ज्योतिर्लिंग मंदिर बनाया जाएगा। उन्होंने कहा कि मार्च माह के बाद चिंहित तीर्थ स्थलों पर शराब की दुकानों को बंद किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जल के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जीवन के लिए जल महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि जैसे जल संरचना नदी-तालाब के दर्शन मात्र से ही मन प्रसन्न हो जाता है। मानव शरीर में जिस प्रकार धमनियों में रक्त का प्रवाह होता है उसी प्रकार धरती पर नदियाँ बहती हैं इसलिए उन्हें पवित्र रखना ज़रूरी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि माँ नर्मदा के संपूर्ण परिक्रमा पथ को पवित्रता के साथ उसके मूल स्वरूप में स्थापित करने के लिए सरकार दृढ़ संकल्पित है। उन्होंने कहा कि नर्मदा परिक्रमा यात्रियों की सुविधा के लिए बेहतर व्यवस्था की जाएगी। प्रदेश में जहां भी नर्मदा तट हैं वहाँ आयोजनों के लिए घाट निर्माण किया जाएगा एवं यात्रियों की सुविधा के लिए साईनऐप लगायें जाएँगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश नदियों का मायका है, जिसमें माँ नर्मदा का स्थान सभी नदियों में सबसे अलग है।

उन्होंने कहा कि धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए भी सरकार द्वारा हर संभव प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि सरकार स्वच्छता के माध्यम से विकास के कार्य को भी नए मुकाम तक पहुंचाने के लिए प्रयासरत है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि केमिकल युक्त खेती करने से फसल का उत्पादन तो होता है, लेकिन जीवन में अनेक बीमारियां भी होती है, इससे बचने के लिए एक अभियान संचालित किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्राकृतिक व जैविक खेती करने वाले किसानों को प्रोत्साहन दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए गौ-माता का पालन करना होगा

मणिपुर में कुकी संगठनों ने अनिश्चितकालीन बंद बुलाया

इंफाल (एजेंसी)। अमित शाह ने 8 मार्च से राज्य में सामान्य आवाजाही बहाल करने का निर्देश दिया था। कुकी संगठनों ने शनिवार को इसका विरोध करते हुए हिंसक प्रदर्शन किया। इसमें 1 शख्स की मौत हो गई। मणिपुर में फ्री ट्रैफिक मूवमेंट के पहले दिन शनिवार को सुरक्षाबलों और प्रदर्शनकारियों के बीच हुई झड़प में 40 लोग घायल हुए हैं। राज्य में 8 मार्च से सभी इलाकों में सामान्य आवाजाही शुरू की गई, जिसका कुकी समुदाय के लोगों ने विरोध किया। अधिकारियों ने बताया कि सुरक्षाबलों की शनिवार की कार्रवाई के खिलाफ कुकी-जो समूहों द्वारा

अनिश्चितकालीन बंद का आह्वान किया गया है। कांगपोकपी जिले में रविवार सुबह स्थिति तनावपूर्ण लेकिन शांत है। यहां अतिरिक्त सुरक्षाबलों को तैनात किया गया है। मणिपुर पुलिस ने एक बयान में कहा कि प्रदर्शनकारियों ने सुरक्षाबलों पर गोलीबारी की है। गुलेल का भी इस्तेमाल किया गया है। सुरक्षाबलों के 5 वाहनों के शीशे क्षतिग्रस्त हो गए। झड़प के दौरान 16 प्रदर्शनकारी घायल हो गए और एक प्रदर्शनकारी की चोटों के कारण मौत हो गई।झ वाहन जलाए, सड़कों पर पेड़ काटकर डाल दिए इससे पहले शनिवार को कुकी समुदाय ने प्रदर्शन के दौरान सड़कों पर पत्थर बिछाकर और टायर जलाकर सड़कें ब्लॉक करने की कोशिश की। कई जगह वाहनों में आग लगा दी गई। बसों को पलट दिया गया। इसके बाद सुरक्षाबलों ने प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज और आंसू गैस के गोले छोड़े। हाईवे पर पेट्रोलिंग की जा रही है कांगपोकपी जिले के एक अधिकारी ने बताया कि एनएच-2 (इम्फाल-दीमापुर रोड) के साथ गमघीफई और अन्य हिस्सों में अतिरिक्त सुरक्षा बलों को तैनात किया गया है। कानून-व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए वाहनों की गश्त की जा रही है।

भिखारी बनकर लूट करने वाला असद एनकाउंटर में ढेर

मथुरा (एजेंसी)। मथुरा पुलिस ने एक लाख के इनामी बदमाश फाती उर्फ असद (48) को ढेर कर दिया। असद पर 36 से ज्यादा मुकदमे थे। पुलिस लंबे अर्से से उसकी तलाश कर रही थी। वह भीखारी बनकर रेकी करता था। शैलेश पांडेय ने बताया- रविवार तड़के पुलिस को सूचना मिली कि थाना हाईवे के कृष्णा कुंज कॉलोनी के एक घर में फाती अपने 3 साथियों के साथ छिपा है। एसएसपी ने बताया- मैं पुलिस टीम के साथ वहां पहुंचा और घेराबंदी की। पुलिस को देखते बदमाश फायरिंग करते हुए भागने लगे। पुलिस ने पीछा करके बदमाशों को रुकने के लिए कहा, लेकिन उन्होंने फायरिंग जारी रखी। पुलिस ने भी जवाबी फायरिंग की। इसमें एक गोली फाती के लग गई। खून से लथपथ होकर वह जमीन पर गिर पड़ा। उसे नजदीक अस्पताल लेकर गए।

वहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। एसएसपी ने बताया- अंधेरे का फायदा फाती के तीनों साथी फरार हो गए। जगह-जगह बैरिकेडिंग पर उनकी जंगलों में तलाश की जा रही है। एनकाउंटर के दौरान बदमाशों की एक गोली मेरे बुलेट प्रूफ जैकेट में लगी, जोकि जैकेट में ही फंस गई। मथुरा पुलिस के मुताबिक, असद पुत्र यासिन हापुड़ के गढ़मुक्तेश्वर का रहने वाला था।

जम्मू-कश्मीर सरकार टीटवाल में शारदा मंदिर में 'यात्री निवास' बनाने की योजना बना रही है-उमर

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने शनिवार को कहा कि उनकी सरकार दो साल पहले नियंत्रण रेखा (एलओसी) के पास टीटवाल में खोले गए शारदा मंदिर में 'यात्री निवास' बनाने की योजना बना रही है।

विधानसभा में नेशनल कॉन्फ्रेंस के विधायक जाविद अहमद मिरचल के तारांकित प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि 1.5 करोड़ रुपये की लागत से मंदिर में 'यात्री निवास' और जलपान घर के निर्माण के लिए एक विस्तृत

परियोजना प्रगति पर है।

शारदा बचाओ समिति ने 2023 में नियंत्रण रेखा के पास अंतिम गांव टीटवाल में मां शारदा देवी मंदिर की स्थापना की, जो तीर्थयात्रियों के लिए आधार शिविर के रूप में कार्य करेगा।

कश्मीरी पंडित पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में शारदा पीठ कॉरिडोर बनाने की मांग कर रहे हैं। सीमावर्ती पर्यटन की अपार संभावनाओं को स्वीकार करते हुए मुख्यमंत्री ने संबंधित विधायकों से सरकार को अपने घरों को होमस्टे में परिवर्तित करने के इच्छुक परिवारों को पंजीकृत करने में सहायता करने का अनुरोध किया।

पर्यटन विभाग भी संभाल रहे अदुल्ला ने कहा कि विभाग ने अब तक करनाह में छह और टीटवाल में पांच होमस्टे पंजीकृत किए हैं।

समृद्धि एक्सप्रेसवे पर वाहन पलटने से दो लोगों की मौत, 13 घायल

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के मुंबई-नागपुर समृद्धि एक्सप्रेसवे पर शनिवार सुबह एक एसयूवी पलटने के बाद एक अन्य वाहन से हुई टक्कर मेंदो लोगों की मौत हो गई जबकि 13 अन्य घायल हो गए। पुलिस ने यह जानकारी दी। सिंधखेड़ राजा पुलिस थाने के एक अधिकारी ने बताया कि दुर्घटना सुबह करीब नौ बजे उस समय हुई जब एसयूवी यवतमाल से श्रद्धालुओं को लेकर शिर्डी की ओर जा रही थी। उन्होंने बताया कि उसमें 15 लोग सवार थे। उन्होंने बताया कि एसयूवी का एक टायर फटने से वह अनियंत्रित होकर पलट गयी और इसी दौरान पीछे से आ रही एक कार ने भी उसमें टक्कर मार दी। पुलिस अधिकारी ने बताया कि मृतकों की पहचान विद्या साबले और मोतीराम बोरकर के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि हादसे में घायल 13 लोगों को पास के अस्पताल में भर्ती कराया गया है जिनमें से तीन की हालत गंभीर बनी हुई है। अधिकारी ने बताया कि दुर्घटना की सूचना मिलते ही यातायात पुलिस और आपातकालीन सेवाओं की टीम घटनास्थल पर पहुंची।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने किया सिफी डाटा सेंटर का उद्घाटन

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यानाथ ने गौतमबुद्धनगर जिले के दादरी क्षेत्र में नया राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) बनाने की शनिवार को घोषणा की। मुख्यमंत्री ने शनिवार को यहां सेक्टर 132 में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच 'सिफी डाटा सेंटर' का उद्घाटन एवं लोकार्पण किया। उन्होंने इस मौके पर अपने संबोधन में कहा, ''आज के आधुनिक युग की आवश्यकता, युवाओं की जरूरतों और वैश्विक

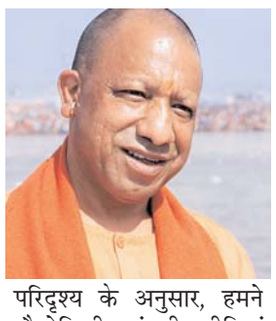

परिदृश्य के अनुसार, हमने प्रौद्योगिकी संबंधी नीतियां तैयार की हैं।'' एक बयान के अनुसार, उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने कारोबार सुगमता में एक बड़ी छलांग लगाई है जिसके सकारात्मक परिणाम आज सबको स्पष्ट रूप से देखने को मिल रहे हैं। उन्होंने तिरुपति बालाजी के चित्र का लोकार्पण करते हुए वेंकटेश्वर स्वामी की स्तुतियों का श्रवण किया तथा सिफी को शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री ने कहा कि देश के शीर्ष उपलब्धि वाले राज्य के रूप में उत्तर प्रदेश ने कारोबार सुगमता में बड़ी उपलब्धि हासिल की है। उन्होंने कहा, '' एकल खिड़की मंजूरी प्रणाली हमारी पारदर्शी प्रक्रिया को दर्शाता है और प्रदेश में उद्योगपरक नीतियों को लागू करने का ही परिणाम आज हम सब देख रहे हैं।''

उत्तराखंड में स्कूटी 100 मीटर गहरी खाई में गिरी, तीन लोगों की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तराखंड के रुद्रप्रयाग जिले में कुंडा-दानकोट के पास एक स्कूटी के 100 मीटर गहरी खाई में गिर जाने से उस पर सवार तीन लोगों की मौत हो गई। एक अधिकारी ने शनिवार को यह जानकारी दी।

अधिकारी ने बताया कि मृतक स्थानीय थे, जिनकी पहचान अंकित (27), टीटू (23) और संदीप (27) के रूप में हुई है। यह दुर्घटना शुक्रवार देर रात चोपता-पोखरी मोटर मार्ग पर हुई।

रुद्रप्रयाग के जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी नंदन सिंह रजवार ने बताया कि घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस और राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल (एसडीआरएफ) के जवान मौके पर पहुंचे और बचाव अभियान शुरू किया।

उन्होंने बताया कि रात सवा 11 बजे स्कूटी सड़क से नीच 100 मीटर गहरी खाई में गिर गई।

रजवार ने बताया कि स्कूटी सवार तीन लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। मृतकों के शवों को खाई से बाहर निकाला गया और एंबुलेंस से पोस्टमार्टम के लिए रुद्रप्रयाग के जिला अस्पताल ले जाया गया।

तेलंगाना के मुख्यमंत्री ने महिला स्वयं सहायता समूहों को सशक्त बनाने की योजना की घोषणा की

नई दिल्ली (एजेंसी)। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी ने शनिवार को घोषणा की कि उनकी सरकार एक करोड़ महिलाओं को करोड़पति बनाने की पहल के तहत महिला स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को चावल मिलें, गोदाम और अन्य सुविधाएं स्थापित करने के लिए सशक्त बनाएगी।

रेड्डी ने अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर एक जनसभा में कहा कि राज्य सरकार धान की खरीद करने, उसे गोदामों में रखने, चावल तैयार करने तथा इसकी राज्य सरकार और भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) को आपूर्ति करने की प्रक्रिया में स्वयं सहायता समूहों की मदद करेगी।

उन्होंने कहा कि सरकार का एक हजार अबर डॉलर की अर्थव्यवस्था का लक्ष्य तभी हासिल किया जा सकता है जब स्वयं सहायता समूह आगे बढ़ें। उन्होंने कहा कि राज्य में स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों की कुल संख्या मौजूदा 65 लाख से बढ़कर एक करोड़ होने की उम्मीद है। रेड्डी ने इन समूहों को मजबूत करने के लिए कई योजनाओं की शुरूआत की।

महिला आरक्षण को लेकर कांग्रेस की महिला इकाई 10 मार्च को करेगी प्रदर्शन

नई दिल्ली (एजेंसी)। अखिल भारतीय महिला कांग्रेस ने शनिवार को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिला आरक्षण के क्रियान्वयन के लिए 10 मार्च को संसद का घेराव करने की घोषणा की। अखिल भारतीय महिला कांग्रेस की प्रमुख अलका लांबा ने यह भी घोषणा की कि वे संसद और राज्य विधानसभाओं में महिला आरक्षण के शीघ्र क्रियान्वयन के लिए केंद्र सरकार पर दबाव बनाने के वास्ते सोमवार को जंतर-मंतर पर धरना प्रदर्शन का आयोजन करेंगी। शक्ति सम्मान कार्यक्रम का आयोजन कांग्रेस मुख्यालय इंदिरा भवन में किया गया, जिसमें महिला कांग्रेस की प्रदेश इकाई की प्रदेश अध्यक्ष, राष्ट्रीय पदाधिकारी और विभिन्न राज्यों से आई कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया।

आरजी कर मामला: मृतक महिला चिकित्सक की मां ने प्रधानमंत्री मोदी से मिलने की इच्छा जताई

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में कोलकाता के आरजी कर अस्पताल में एक महिला चिकित्सक से दुष्कर्म और उसकी हत्या के मामले में पीड़िता की मां ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलने की इच्छा जताई है। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर शोक संतप्त मां ने पश्चिम बंगाल में महिलाओं की सुरक्षा पर भी सवाल उठाया। उन्होंने कहा, मैं प्रधानमंत्री से मिलना चाहती हूं और उनसे इस मामले में हस्तक्षेप करने और हमारी बेटी को न्याय दिलाने की अपील करना चाहती हूं। उन्होंने कहा, हमारी बेटी ने बड़े सपने देखे थे। हमें कभी नहीं लगा था कि उसे इतनी दर्दनाक मौत मिलेगी। सात महीने हो गए, लेकिन न्याय कहां है?

हमारे पास तो अभी तक उसका मृत्यु प्रमाणपत्र भी नहीं है। उ न्होंने सवाल किया, अगर एक महिला चिकित्सक अपने कार्यस्थल पर असुरक्षित है, तो सुरक्षा कहां है? प्रधानमंत्री से मिलने की मां की इच्छा पर प्रतिक्रिया देते हुए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की विधायक अग्निमित्र पॉल ने कहा, प्रधानमंत्री से मिलने का समय मांगने की एक प्रक्रिया होती है।

मुझे यकीन है कि हमारे प्रधानमंत्री उन्हें (माता-पिता को) कुछ समय देंगे और उनकी अपील सुनेंगे।

रोहित शर्मा के रिटायरमेंट पर शुभमन गिल ने दी प्रतिक्रिया

नई दिल्ली नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के उपकप्तान शुभमन गिल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की। साथ ही इस दौरान उन्होंने रोहित शर्मा के रिटायरमेंट पर भी बात की। दरअसल, इस बात के कयास लगाए जा रहे हैं कि रोहित शर्मा इस टूर्नामेंट के बाद अपने भविष्य पर फैसला ले सकते हैं।

शुभमन गिल से जब रोहित के रिटायरमेंट को लेकर पूछा गया तो उन्होंने कहा कि ड्रेसिंग रूम में या मेरे साथ इस पर कोई चर्चा नहीं हुई। यहां तक कि रोहित भाई भी हम सभी की तरह चैंपियंस ट्रॉपी फाइनल के बारे में सोच रहे हैं। इसलिए फिलहाल ऐसा कुछ नहीं होगा।

साथ ही गिल ने टीम इंडिया के बैटिंग लाइनअप के बारे में बात करते हुए कहा कि, ये बेस्ट भारतीय बल्लेबाजी लाइनअप है जिसका मैं हिस्सा हूं।

इस लाइनअप में ऑल टाइम ग्रेट विराट भाई और रोहित भाई हैं। रोहित भाई सर्वश्रेष्ठ सलामी बल्लेबाजों में से एक हैं जबकि विराट भाई ऑल टाइम ग्रेट हैं। हमारी बल्लेबाजी में बहुत गहराई है जिसमें केएल राहुल, हार्दिक पंड्या, श्रेयस अय्यर सभी शामिल हैं।

वहीं गिल ने कहा कि ये टीम इंडिया के लिए मेरा दूसरा आईसीसी इवेंट है और इसलिए मैं निश्चित रूप से उत्साहित हूं। हम कोशिश करेंगे और वह हासिल करेंगे जो हम पिछली बार नहीं कर पाए थे। बड़े मैचों में हमेशा दबाव होता है, लेकिन अगर आप पिछले गेम को देखें, तो ऑस्ट्रेलिया के पास बहुत अनुभवी गेंदबाज नहीं थे, मैच बड़ा था। ऐसे मैचों में जो भी दबाव को संभालता है और यह नहीं सोचता कि वे फाइनल में खेल रहे हैं वे टीमें जीतती हैं। वेस्टइंडीज और ऑस्ट्रेलिया जैसी पिछली टीमों को देखें। वे नॉकआउट मैचों में अच्छा खेलते थे क्योंकि वे इस मौके को खेल से दूर रखते थे।

पिच को लेकर उपकप्तान ने कहा कि इस पिच से ज्यादा रन की उम्मीद करना बेकार है। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि पिच अलग तरह का बर्ताव नहीं करने जा रही है। गर्म मौसेम के बावजूद पिच का व्यवहार वैसा ही होगा जैसा कि पहले रहा है। अगर दुबई की पिच पर स्पिनर्स को पूरी मदद मिलने जा रही है यानी इस बात की पूरी उम्मीद है कि एक बार फिर टीम इंडिया 4 स्पिनर्स के साथ मैदान पर उतर सकती है।

आईपीएल ट्रॉफी के बिना अधूरा रहेगा विराट कोहली का करियर- एबी डिविलियर्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेटर विराट कोहली का शानदार करियर तब और खास हो जाएगा जब वह आरसीबी को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) का खिताब जिताएंगे। यह मानना है दक्षिण अफ्रीका और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के पूर्व दिग्गज बल्लेबाज एबी डिविलियर्स का। विराट कोहली 2008 में आईपीएल की शुरुआत से ही आरसीबी से जुड़े हुए हैं और उन्होंने 140 मैचों में टीम की कप्तानी भी की है। हालांकि, अब तक वह एक भी आईपीएल ट्रॉफी नहीं जीत पाए हैं, जिससे उनकी उपलब्धियों की सूची में यह एक अधूरा सपना बना हुआ है। विराट कोहली आईपीएल में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं। उन्होंने 252 मैचों में 38.67 की औसत से 8,004 रन बनाए हैं, जिसमें 8 शतक और 55 अर्धशतक शामिल हैं। वह इस टूर्नामेंट में 6,769 रनों के साथ दूसरे स्थान पर मौजूद शिखर धवन से काफी आगे हैं। बावजूद इसके, आरसीबी 17 सीजन में एक भी बार चैंपियन नहीं बन सकी है। टीम 2009, 2011 और 2016 में तीन बार फाइनल में पड़ा। आईपीएल 2025 की शुरुआत से पहले, डिविलियर्स ने उम्मीद जताई है कि इस बार विराट अपनी टीम के लिए खिताब जीत सकते हैं।

कैसे माही की एक सलाह ने मुझे आत्मविश्वास दिलाया-राहुल त्रिपाठी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेटर राहुल त्रिपाठी ने बताया कि कैसे पूर्व कप्तान एमएस धोनी की सलाह ने उन्हें 2017 में आईपीएल में पदार्पण के दौरान मदद की। फ्रैंचाइजी के लिए अपने पहले मैच से पहले माही ने त्रिपाठी को शांत करने में मदद की। उन्होंने कहा, अपना पहला मैच खेलने से दो दिन पहले, मैं ड्रेसिंग रूम में उन्हें देख रहा था। उन्होंने मुझे बुलाकर कहा कि मैं कुछ भी अतिरिक्त करने या सोचने की कोशिश न करूं और मुझे प्रशिक्षण के दौरान जिस तरह से खेल रहा था, उसी तरह खेलने के लिए माही ने कहा। यह देखते हुए कि यह सलाह उस कद के क्रिकेटर से आई थी और यह तथ्य कि मैं अपना पहला मैच खेलने जा रहा था, इससे मुझे बहुत आत्मविश्वास मिला। माही की इस सलाह ने वास्तव में मेरी घबराहट को शांत किया। उन्होंने कहा, मैं भाग्यशाली हूं कि मुझे उनके साथ समय बिताने का मौका मिला। क्रिकेट जगत में कई लोगों का सपना होता है कि वे उनके साथ क्रिकेट के अनुभव साझा करें और उनके साथ खेलें। उनके साथ रहकर मैंने देखा है कि वे कितने सरल हैं। लंबे इंतजार के बाद राहुल ने आखिरकार 31 साल की उम्र में जनवरी 2023 में श्रीलंका के खिलाफ टी201 सीरीज के दौरान भारत के लिए अपना अंतरराष्ट्रीय डेब्यू किया। राहुल ने कहा, मैंने कभी हार नहीं मानी। कई बार यह कठिन था और ऐसा लगा कि भारत का प्रतिनिधित्व करने का सपना सपना ही रह जाएगा है।

इंग्लैंड के नए वनडे कप्तान बन सकते हैं बेन स्टोक्स

लंदन (एजेंसी)। जोस बटलर के इस्तीफे के बाद इंग्लैंड के स्टार ऑलराउंडर बेन स्टोक्स सीमित ओवरों के क्रिकेट में टीम की कमान संभाल सकते हैं। इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) के निदेशक रॉब की ने कहा हैं कि स्टोक्स के नाम पर विचार न करना बड़ी भूल होगी।

टेस्ट क्रिकेट में अपनी रणनीतिक कुशलता साबित कर चुके स्टोक्स को अब वनडे टीम का नेतृत्व करने का मौका मिल सकता है। इंग्लैंड के लिए चैंपियंस ट्रॉफी 2025 बेहद निराशाजनक रहा, जहां टीम एक भी मैच नहीं जीत पाई। इस खराब प्रदर्शन के चलते बटलर ने टूर्नामेंट के बीच में ही कप्तानी छोड़ने का फैसला किया। इससे पहले भारत के खिलाफ वनडे सीरीज में भी इंग्लैंड को हार का सामना करना पड़ा था। बेन स्टोक्स हैमस्ट्रिंग की चोट के कारण चैंपियंस ट्रॉफी में नहीं खेल पाए थे और 2023 विश्व कप के बाद से वनडे क्रिकेट से दूर हैं। हालांकि, उन्होंने पहले भी संन्यास के अपने फैसले को पलटते हुए वनडे में वापसी की थी। ईसीबी के निदेशक की ने स्टोक्स की कप्तानी की तारीफ करते हुए कहा कि वह टेस्ट क्रिकेट में खुद को शानदार रणनीतिकार साबित कर चुके हैं और टीम के खिलाड़ियों से बेहतरीन प्रदर्शन कराने की क्षमता रखते हैं।

एमएस को लेकर अनिल कुंबले का बड़ा दावा, कहा- आईपीएल 2025 में वो सीएसके के लिए नहीं उतरेंगे मैदान

नई दिल्ली नई दिल्ली (एजेंसी)। टीम इंडिया के पूर्व स्पिनर अनिल कुंबले ने चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के फाइनल से पहले चेन्नई सुपर किंग्स के पूर्व कप्तान एमएस धोनी को लेकर बड़ा दावा किया है। दरअसल, कुंबले के मुताबिक धोनी इस सीजन में सीएसके के लिए मैदान पर नहीं उतरेंगे। हालांकि, माना जा रहा है धोनी आईपीएल 2025 में सीएसके के लिए खेलते हुए नजर आएंगे। जिन्हें इस फ्रेंचाइजी ने अनकैप्ड प्लेयर के रूप में 4 करोड़ में रिटेन किया था। इंटरनेशनल क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद धोनी लगातार आईपीएल खेल रहे हैं और अब वो ज्यादा गेंदों का सामना नहीं करते हैं और उन्होंने खुद को बैटिंग ऑर्डर में नीचे कर लिया है। धोनी ने आईपीएल 2024 में सिर्फ 73 गेंदों का सामना किया जबकि आईपीएल 2023 में उन्होंने 57 गेंदें खेली थी। पिछले सीजन में चेन्नई के कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ बने थे और अब धोनी उनकी कप्तानी में खेलते हुए नजर आने वाले हैं। पिछले सीजन में उनकी कप्तानी में सीएसके दूसरे दौर में पहुंचने से चूक गई थी।

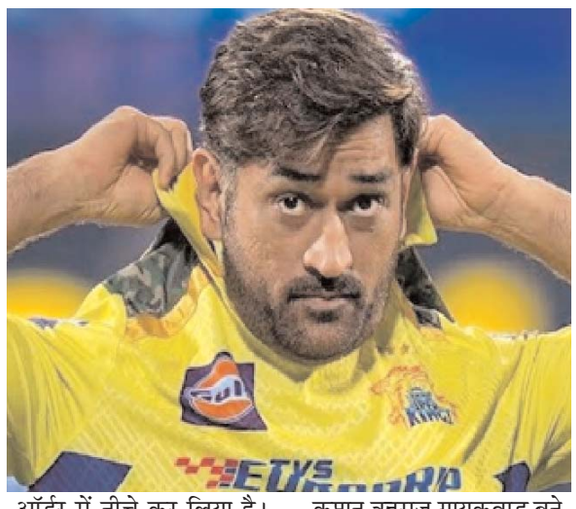

चेन्नई ने आईपीएल 2025 के लिए अपनी तैयारियां शुरू कर दी हैं और टीम के कई खिलाड़ी चेन्नई पहुंच चुके हैं। अब आईपीएल 2025 की शुरुआत से पहले अनिल कुंबले ने धोनी पर चौंकाने वाला बयान दिया और दावा किया कि वह शायद हर मैच नहीं खेलेंगे। जियो हॉटस्टार से बात करते हुए कुंबले ने कहा कि ऋतुराज की कप्तानी में ये ऐसा सीजन हो सकता है जिसमें धोनी मैदान पर भी नहीं उतरेंगे। रिटेंशन नियमों के कारण वह अभी भी टीम का हिस्सा हो सकते हैं और इम्पैक्ट प्लेयर नियम के कारण हर मैच केले बिना भी उनकी मौजूदगी टीम के लिए अहम हो सकती है।

मुंबई इंडियंस टीम में शामिल हुआ ये धाकड़ खिलाड़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 से पहले हार्दिक पंड्या की कप्तानी वाली मुंबई इंडियंस को बड़ा झटका लगा है। दरअसल, मुंबई स्क्वॉड में शामिल लिजाद विलियम्स चोट के कारण टूर्नामेंट से बाहर हो गए हैं। एमआई ने लिजाद को ऑक्शन में 75 लाख रुपये में खरीदा था। अब उनके बाहर होने के बाद टीम ने रिप्लेसमेंट का भी आधिकारिका ऐलान कर दिया है। टीम ने साउथ अफ्रीका के ऑलराउंडर प्लेयर कॉर्बिन बॉश को टीम में शामिल किया है।

कॉर्बिन बॉश 2014 में आईसीसी अंडर-19 वर्ल्ड कप जीतने वाली साउथ अफ्रीका की अंडर-19 टीम का हिस्सा थे। उन्होंने फाइनल मैच में शानदार स्पेल (4/15) डाला था। उन्होंने 15 रन देकर 4 विकेट लिए थे। इसके लिए उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच भी चुना गया था। वह अपनी घरेलू टीम के लिए सभी फॉर्मेट में नियमित रहे हैं। उन्होंने 2024 में साउथ अफ्रीका के लिए इंटरनेशनल क्रिकेट में डेब्यू किया था।

लिजाद विलियम्स के रिप्लेसमेंट के तौर पर मुंबई इंडियंस ने आईपीएल 2025 के लिए 7वां ऑलराउंडर टीम में शामिल किया है। कॉर्बिन बॉश से पहले हार्दिक पंड्या समेत 6 ऑलराउंडर टीम में शामिल हो गए हैं। दाएं हाथ के बल्लेबाज कॉर्बिन मिडिल ऑर्डर में अच्छी बल्लेबाजी कर सकते हैं। उन्होंने 86 टी20 मैच खेले हैं, जिसमें 663 रन बनाए हैं और 59 विकेट अपने नाम किए हैं।

सभी प्रारूपों में खेलने के लिए तैयार हूं, लेकिन क्लासिकल शतरंज हमेशा राज करेगा- डी गुकेश

नई दिल्ली (एजेंसी)। शतरंज के बदलते परिदृश्य से बेफिक्र मौजूदा विश्व चैंपियन डी गुकेश सभी प्रारूपों में प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार हैं, लेकिन उन्होंने कहा कि फ्रीस्टाइल शतरंज जहां रोमांच पैदा करता है वहीं अपने समृद्ध इतिहास के साथ क्लासिकल शतरंज हमेशा सबसे महत्वपूर्ण बना रहेगा। शतरंज में अभी दो वर्ग सामने आ रहे हैं। इनमें एक वर्ग जहां फ्रीस्टाइल का समर्थक है तो दूसरा वर्ग क्लासिकल शतरंज के प्रति वफादार बना हुआ है। इससे शतरंज में विभाजन की संभावना बन गई है। पिछले साल चीन के डिंग लिरेन को हराकर विश्व चैंपियन बनने वाले गुकेश को नहीं लगता है की शतरंज दो गुट में बंट जाएगा। गुकेश ने यहां इंडिया टुडे कॉन्क्लेव 2025 में कहा, ''मैं इसके बारे में ज्यादा नहीं सोचता। फ्रीस्टाइल काफी रोमांचक है और मैं इसमें खेल कर खुश हूं। लेकिन यह कहना जल्दबाजी होगी कि यह तेजी से आगे बढ़ रहा है। फ्रीस्टाइल में अभी तक केवल दो ही बड़े टूर्नामेंट हैं।'' उन्होंने कहा, ''मैं चाहता हूं कि फ्रीस्टाइल सशक्त हो जाए लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह शतरंज के मूल प्रारूप पर हावी हो जाएगा। क्लासिकल शतरंज का इतिहास और विरासत इसे और अधिक महत्वपूर्ण बनाती है।'' गुकेश ने कहा, ''क्लासिकल, रैपिड और ब्लिट्ज़ के साथ फ्रीस्टाइल का जुड़ना खेल के लिए अच्छा है लेकिन यह देखना बाकी है कि यह प्रारूप कैसे आगे बढ़ता है। मैं सभी प्रारूपों में खेलने के लिए तैयार हूं।'' गुकेश ने इसके साथ ही सात से 14 अप्रैल तक होने वाले फ्रीस्टाइल शतरंज ग्रैंड स्लैम टूर के पेरिस चरण के लिए अपनी भागीदारी की पुष्टि की। विश्व के नंबर एक खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन और गुकेश उन चोटी के 12 ग्रैंडमास्टर में शामिल है जिन्होंने 750,000 डॉलर की पुरस्कार राशि वाले पेरिस चरण में भाग लेने की पुष्टि की है। इस भारतीय खिलाड़ी के लिए विश्व चैंपियन बनने तक की राह आसान नहीं रही और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में खेलने के लिए उन्हें अपने करीबी लोगों से भी पैसा जुटाना पड़ता था। गुकेश ने कहा, ''मुझे याद है कि मेरे माता-पिता के दोस्त मुझे विदेश में टूर्नामेंट खेलने के लिए प्रायोजित कर रहे थे।

दिल्ली कैपिटल्स प्लेऑफ का सपना धूमिल, गुजरात जायंट्स ने कांटे के मुकाबले में पांच विकेट से दी मात

लखनऊ (एजेंसी)। गुजरात जायंट्स ने हरलीन देओल (नाबाद 70 रन) के अर्धशतक से शुक्रवार को यहां महिला प्रीमियर लीग (डब्ल्यूपीएल) के रोमांचक मैच में दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ तीन गेंद रहते पांच विकेट से जीत दर्ज कर खुद को प्लेऑफ की दौड़ में बरकरार रखा। यह गुजरात जायंट्स की लगातार तीसरी जीत है जिससे वह आठ अंक लेकर तालिका में दूसरे स्थान पर पहुंच गई है और प्लेऑफ की दौड़ में कायम है। दिल्ली कैपिटल्स के 10 अंक हैं। दिल्ली कैपिटल्स के लिए कप्तान मेग लैनिंग ने 57 गेंद में 15 चौके और एक छक्के से 92 रन बनाये। उन्होंने और सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा (40 रन,27 गेंद, तीन चौके, तीन छक्के) ने महज नौ ओवर के अंदर तेजी से पहले विकेट के लिए 83 रन की साझेदारी कर धमाकेदार शुरूआत कराई जिससे टीम ने पांच विकेट पर 177 रन का प्रतिस्पर्धी स्कोर खड़ा किया।

इस लक्ष्य का पीछा करने उतरी गुजरात जायंट्स 19.3 ओवर में पांच विकेट पर 178 रन ही बनाकर जीत दर्ज की। हरलीन के अलावा बेथ मूनी की 44 रन की पारी भी अहम रही। अंत में कप्तान एशले गार्डनर (13 गेंद में 22 रन) और डायंड्रा डोटिन (10 गेंद में 24 रन) ने तेजी से रन जुटाकर टीम को लक्ष्य के करीब पहुंचाया।

गुजरात की टीम ने दूसरे ही ओवर में सलामी बल्लेबाज दयालन हेमलता (01) का विकेट गंवा दिया। लेकिन विकेटकीपर और सलामी बल्लेबाजमूनी (35 गेंद, छह चौके) और हरलीन देओल (49 गेंद, नौ चौके, एक छक्का) ने 57 गेंद में दूसरे विकेट के लिए 85 रन की साझेदारी निभाई। मीनू मणि ने 12वें ओवर में मूनी का विकेट झटक लिया। पर हरलीन ने आक्रामकता से खेलना जारी रखा। उन्होंने कप्तान एशले गार्डनर के साथ तीसरे विकेट के लिए 25 गेंद में 39 रन और डायंड्रा डोटिन के साथ चौथे विकेट के लिए 14 गेंद में 34 रन की साझेदारी निभाई जिससे टीम लक्ष्य के करीब पहुंची।

डोटिन ने 18वें ओवर में जेस जोनाथन पर दो चौके और एक छक्का जड़ दिया। पर इसी गेंदबाज ने डोटिन और फोबे लिचफील्ड को लगातार गेंदों पर आउट कर दिया। लेकिन डोटिन के 10 गेंद में दो चौके और दो छक्के ने गुजरात जायंट्स की मुश्किल आसान कर दी। इससे अब दो ओवर में 16 रन की जरूरत थी और काशवी गौतम ने 19वें ओवर की अंतिम गेंद पर छक्का जड़ दिया।

जिससे अंतिम ओवर में जीत के लिए सात रन चाहिए थे और हरलीन ने आसानी से ये रन जुटा लिए।

इससे पहले बल्लेबाजी का न्योता मिलने के बाद दिल्ली कैपिटल्स ने अच्छी शुरूआत की। लेकिन शेफाली नौंवे ओवर में मेघना सिंह की गेंद पर एक और छक्का लगाने के प्रयास में बाउंड्री पर फोबे लिचफील्ड के हाथों कैच आउट हो गईं।

वनडे सबसे खराब प्रारूप है, नियमों के कारण यह खत्म हो गया-मोईन अली

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड के पूर्व ऑलराउंडर मोईन अली ने बल्लेबाजों के पक्ष में नियमों की कड़ी आलोचना की जिससे 50 ओवर का प्रारूप खत्म होने की कगार पर पहुंचा जिससे टी20 लीग में 'फ्रीलांस' (स्वतंत्र) खेलने वाले खिलाड़ियों की संख्या बढ़ रही है। मोईन ने इंग्लैंड के लिए 138 वनडे मैच खेले हैं जिसमें उन्होंने 2,355 रन बनाने के अलावा 111 विकेट भी लिए हैं जबकि 68 टेस्ट मैच में उन्होंने 3000 से अधिक रन बनाए हैं और 200 से अधिक विकेट लिए हैं। उन्होंने पिछले साल सितंबर में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया था और वह आगामी इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में कोलकाता नाइट राइडर्स के लिए खेलेंगे।

मोईन ने टॉकस्पोर्ट क्रिकेट से कहा, ''विश्व कप और चैंपियंस ट्रॉफी को छोड़कर यह वनडे प्रारूप लगभग पूरी तरह खत्म हो गया है। यह खेलने के लिए सबसे

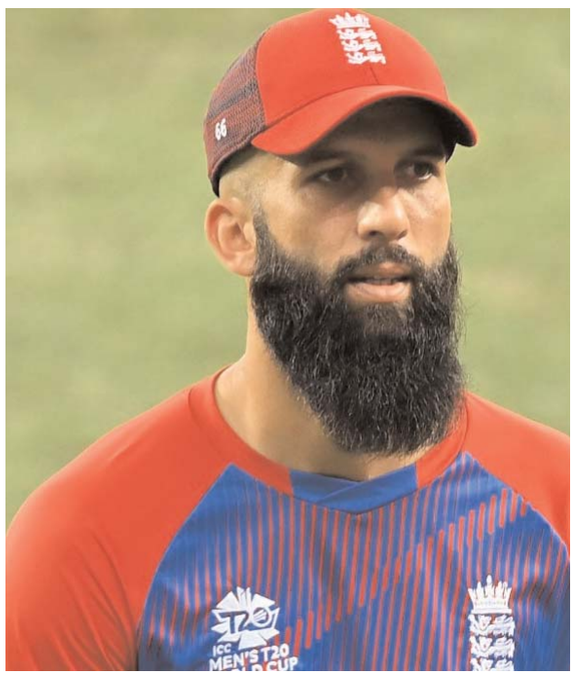

खराब प्रारूप है और मुझे लगता है कि इसके कई कारण हैं।'' पहले के समय में पहले पावरप्ले के बाद सर्कल के बाहर पांच क्षेत्ररक्षक हुआ करते थे लेकिन पिछले कुछ साल में यह संख्या चार हो गई है जिससे बीच के ओवरों में बल्लेबाजी करना आसान हो गया है। इतना ही नहीं दो नई गेंदों का इस्तेमाल किया जाता है जो पहले नहीं होता था जिससे रन बनाना भी बहुत आसान हो जाता है।

उन्होंने कहा, ''मुझे लगता है कि नियम बहुत खराब हैं। पहले पावरप्ले के बाद अतिरिक्त क्षेत्ररक्षक रखना, मुझे लगता है कि विकेट लेने और किसी भी तरह का दबाव बनाने के लिए यह एक खराब नियम है। इसी वजह से अब खिलाड़ी वनडे क्रिकेट में 60 और 70 का औसत बना रहे हैं।'' उन्होंने कहा, ''जब आप किसी को गेंदबाजी कर रहे होते हैं और आप थोड़ा दबाव डालते हैं तो बल्लेबाज बस रिवर्स-स्वीप करता है और यह एक रन नहीं बल्कि यह चौका होता है। हमेशा बल्लेबाजों के लिए रन बनाने का विकल्प उपलब्ध रहता है।'' मोईन ने चेताया कि ऐसे भी क्रिकेटर हैं जो टी20 लीग में मिलने वाली राशि से समय से पहले संन्यास ले लेंगे। उन्होंने कहा, ''मुझे लगता है कि फ्रेंचाइजी क्रिकेट इसमें मिलने वाली राशि से लुभा रहा है और यह इतना लुभावना है कि खिलाड़ी इससे इनकार नहीं कर सके।

13 मार्च को स्थानीय अवकाश

रीवा. रीवा जिले में वर्ष 2025 के लिये घोषित अवकाश के तहत 13 मार्च को होलिका दहन पर स्थानीय अवकाश रहेगा। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल द्वारा घोषित स्थानीय अवकाश जिले के संपूर्ण सीमा क्षेत्र के शासकीय कार्यालयों तथा संस्थानों में प्रभावशील रहेगा। यह अवकाश जिले के कोषालय, उप कोषालय तथा बैंकों पर लागू नहीं होगा।

कलेक्टर आज करेंगी टीएल पत्रों की समीक्षा

रीवा. कलेक्टर प्रतिभा पाल टीएल बैठक में 10 मार्च को समय सीमा के पत्रों की समीक्षा के साथ ही सीएम हेल्पलाइन की विभागवार अद्यतन स्थिति की समीक्षा करेंगी। कलेक्ट्रेट सभागार में प्रातः 11 बजे से उपस्थिति के निर्देश दिए गए हैं।

चिरहुला मंदिर के पास चोरी की बड़ी वारदात, देर रात शटर तोड़कर घुसे चारों ने की लाखों की चोरी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शहर के बिछिया थाना क्षेत्र अंतर्गत चिरहुला मंदिर के समीप संचालित मां शारदा ट्रेडर्स हार्डवेयर सैनिटरी की दुकान में बीती रात अज्ञात चोरों ने शटर तोड़कर चोरी की बड़ी वारदात को अंजाम दिया। घटना के बाद अज्ञात बदमाश फरार हो गए। वहीं मौके पर पहुंची पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

घटना के संबंध में मां शारदा ट्रेडर्स के संचालक रितेश गुप्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि बीती रात करीब 2 बजे अज्ञात चोरों ने उनकी दुकान का ताला तोड़कर दुकान के अंदर घुसे और काउंटर में रखे करीब 25 हजार नगदी सहित अन्य सामान उठा ले गए। रितेश के मुताबिक अज्ञात चोरों ने तकरीबन चार से पांच लाख की चोरी की वारदात को अंजाम दिया है। जिसमें नल फिटिंग का सामान ज्यादा है।

बता दें कि यह दुकान चिरहुला मंदिर के समीप संचालित है जहां बीती रात्रि चोरों शटर तोड़कर चोरी की वारदात को अंजाम दिया। मौके पर दुकान संचालक को शटर तोड़ने में उपयोग किए जाने वाला सब्बल भी मिला है। फिलहाल घटना की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची है और घटना स्थल का निरीक्षण कर अज्ञात चोरों की पता तलाश शुरू कर दी है।

मेगा जॉब फेयर में 40 कंपनियों द्वारा किया जाएगा युवाओं का चयन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिला मुख्यालय स्थित टीआरएस कॉलेज में युवा संगम का आयोजन अब 25 मार्च को प्रातः 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक किया जायेगा। पूर्व में यह आयोजन 17 मार्च को होना था। युवा संगम कार्यक्रम के तहत आयोजित मेगा जॉब फेयर में जिले के बेरोजगार युवक-युवतियों को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाएंगे। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने मेगा जॉब फेयर के सफल आयोजन के लिए विभिन्न विभागीय अधिकारियों को दायित्व सौंपे हैं। इस संबंध में उप संचालक रोजगार अनिल दुबे ने बताया कि रोजगार मेले में 40 कंपनियों एवं नियोजकों द्वारा युवाओं का चयन किया जाएगा। मेले में शामिल होने के लिए विभिन्न कंपनियों हेतु युवक एवं युवतियों की आयु सीमा 18 से 45 वर्ष के बीच निर्धारित की गई है। आयु सीमा विभिन्न कंपनियों में अलग-अलग होगी। वेतन एवं भत्ते 9 हजार रुपए से 40 हजार रुपए तक निर्धारित किया गया है। युवाओ को अपने साथ मूल अंकसूची तथा निवास प्रमाण पत्र की छायाप्रति, आधार कार्ड या वोटर आईडी, समग्र आईडी, रोजगार कार्यालय का जीवित पंजीयन एवं नवीनतम दो पासपोर्ट साइज के फोटो लेकर आना अनिवार्य होगा।

उप संचालक ने बताया कि रोजगार मेले में मिडिया इंडिया प्रा. लि. महाराष्ट्र (जीएमसीसी), सिनोवा गियर्स एण्ड ट्रांसमिशन प्रा.लि. राजकोट गुजरात, डीएमसीएफएस प्रा.लि., पुणे, जिगनी बेंगलूर, एमआरएफ लिमिटेड गुजरात, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा नसिक, धूत ट्रान्समिशन लिमि. पुणे, मानाबुकी पुणे, अनएकेडमी नोएडा, एसएसपीएल शिरवाल महाराष्ट्र, उत्कर्ष स्मोल फाइनेंस जबलपुर, एल एण्ड टी, फ्लिप कार्ट रीवा, जस्ट डायल रीवा, मुद्रा सोलर प्रा.लि. अदानी सोलर, अदानी न्यू इंडस्ट्री लिमि अडानी विंड, टाटा मोटर ऑटोमोबाइल कंपनी अहमदाबाद गुजरात, मदरसन मेट ऑटोमोटिव प्रा. लि., डिक्सन टेक्नोलॉजी प्रा. लि. नोएडा, आर्मस ग्रुप एलाइड रिसोर्स मैनेजमेंट सर्विसेज इंडिया प्रा. लि., श्री फूड प्रोड्क्स उद्योग विहार चोरहटा रीवा, ख्याति शील्ड ग्लोबल रिच रायपुर छत्तीसगढ़, प्राकृतशील बॉयोटेक प्रा.लि. सवेरा होटल के पास सतना, यशस्वी ग्रुप भोपाल, डी एण्ड एच सेचरोन कंपनी इंदौर, लार्सन एण्ड टूब्रो, शक्ति पंप इंडिया लिमिटेड, हिन्द फार्मा, प्रगतिशील बायोटेक प्रा.लि. रीवा, प्रगतिशील एग्रोटेक प्रा. लि. रीवा, एचडीएफसी लाइफ इश्योरेन्स कंपनी लिमि. रीवा, डीएमसी फिनिसिंग स्कूल प्रा. लि. पुणे, योकोहामा ऑफ हाइवे टायर, गुजरात, रेइज एण्ड मिट्स टायर्स गुजरात, विक्टोरिया इंडस्ट्रीज हरियाणा महाराष्ट्र गुजरात, सिएट टायर्स हलाल गुजरात, आयसर ट्रक एण्ड बस पीथमपुर धार इंदौर, बजाज कैपिटल रीवा, स्वतंत्र माइक्रोफिन प्रा. लि. तथा भारतीय जीवन बीमा निगम रीवा में रोजगार के अवसर उपलब्ध रहेंगे।

रीवा-मुम्बई के बीच शुरू होगी स्पेशल ट्रेन

रीवा सांसद जनार्दन मिश्रा ने पत्र लिखकर की थी मुंबई ट्रेन चलाने की मांग

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए रेलवे प्रशासन द्वारा रीवा-मुम्बई के बीच अनारक्षित साप्ताहिक स्पेशल स्पेशल ट्रेन चलाई जाएगी। ये स्पेशल ट्रेन अप और डाउन में 16-16 फेरा लगाएगी। 22 कोच की साप्ताहिक ट्रेन में सभी जनरल कोच जुड़े रहेंगे। वहीं गोंदिया से छपरा के बीच होली स्पेशल ट्रेन चलाई जाएगी, ये ट्रेन 2 फेरा लगाएगी। यह ट्रेन मई माह में एक ट्रिप के लिए बांद्रा टर्मिनस-रीवा अनारक्षित स्पेशल ट्रेन 15 मई की बजाय 18 मई को चलाई जाएगी। इसी तरह से रीवा-बांद्रा टर्मिनस अनारक्षित स्पेशल 16 मई की बजाय 19 मई को चलाई जाएगी। बांद्रा टर्मिनस-रीवा (09129) अनारक्षित साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन प्रत्येक गुरूवार को 13 मार्च से 26 जून तक बांदा टर्मिनस से सुबह साढ़े 4 बजे चलकर अगले दिन सुबह 5 बजकर 20 मिनट पर सतना और 7 बजे रीवा स्टेशन पहुंचेगी। बताया जा रहा है कि रीवा-बांद्रा टर्मिनस (09130) अनारक्षित साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन प्रत्येक गुरूवार को 14 मार्च से 27 जून तक रीवा स्टेशन से सुबह 11 बजे चलकर 12 बजकर 20 मिनट पर सतना और अगले दिन दोपहर 12 बजकर 15 मिनट पर बांद्रा टर्मिनस पहुंचेगी। गोंदिया-छपरा (08863) होली स्पेशल ट्रेन 12 मार्च को गोंदिया स्टेशन से शाम 5 बजे चलकर अगले दिन सुबह 7 बजकर 10 मिनट पर सतना ओर रात्रि 7 बजे छपरा पहुंचेगी। छपरा-गोंदिया (08864) होली स्पेशल ट्रेन 13 मार्च को रात्रि 10 बजकर 15 मिनट पर चलकर अगले दिन सुबह 8 बजकर 45 मिनट पर सतना और रात्रि 11 बजकर 45 मिनट पर गोंदिया पहुंचेगी।

दरअसल पूर्व में रीवा से मुंबई के लिए जो ट्रेन चलाई जा रही थी उसे महाकुंभ के चलते बंद कर दिया गया था जिसके बाद रीवा संसदीय क्षेत्र से बीजेपी सांसद जनार्दन मिश्रा ने रेल मंत्रालय को पत्र लिखा थी कि रीवा - मुंबई के बीच पुनः ट्रेन चलाई जाए जिसपर रेल मंत्रालय ने समर स्पेशल ट्रेन चलाए जाने की स्वीकृति दी है।

मऊगंज जिले तीन पटवारी निलंबित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। अनुविभागीय राजस्व अधिकारी मऊगंज ने तीन पटवारियों को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। मऊगंज में फार्मर रजिस्ट्री, आर.ओ. आर. एवं राजस्व वसूली, ईकेवाइसी के लिए गतदिनों आयोजित कैंप में उधौपुरवा पटवारी हल्का के कमलेश कुमार पाठक एवं नरैनी हल्का के पटवारी ललित प्रसाद शर्मा अनुपस्थित पाये गये थे। एसडीएम ने संबंधित पटवारियों को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। निलंवन अवधि में पटवारियों का मुख्यालय तहसील कार्यालय मऊगंज नियत किया गया है। इसी प्रकार तहसील नईगढ़ी अन्तर्गत पटवारी हल्का देवरिहनगांव के पटवारी रामलखन चौधरी को बगैर सूचना के मुख्यालय से अनुपस्थित रहने, फोन रिसीव नहीं करने, सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों में समाधानकारक जबाव दर्ज न करने तथा अन्य राजस्व संबंधी कार्यों में लापरवाही बरतने के आरोप में अनुविभागीय अधिकारी द्वारा तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है।

महिला दिवस पर समूह की महिलाओं को किया गया सम्मानित

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। महिला दिवस के अवसर ग्राम पंचायत लोही के एसआरएलएम भवन में कार्यक्रम का आयोजन किया गया द्य महिला दिवस के अवसर पर समूह के महिलाओं द्वारा आजीविका मिशन में माध्यम से उनके आर्थिक एवं सामाजिक उन्नति के विषय में अपने अनुभव व्यक्त किये। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ओम प्रकाश बेदुआ जिला परियोजना अधिकारी एसआरएलएम रीवा, सरोज कुमार जिला प्रबंधक नाबार्ड रीवा, डॉ चन्द्रजीत सिंह वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केंद्र रीवा रहे।

मुख्य अतिथि द्वारा बताया गया कि महिला दिवस का उद्देश्य महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करना और उन्हें सम्मान देना है। अगर हम किसी समाज को मजबूत बनाना चाहते हैं, तो सबसे पहले हमें महिलाओं को सशक्त बनाना होगा। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को उनके अधिकार, शिक्षा, रोजगार और स्वतंत्रता देना ताकि वे अपने जीवन को अपनी शर्तों पर जी सकें। कार्यक्रम का संचालन जीतेन्द्र सिंह जिला प्रबंधक एग्रीकल्चर द्वारा किया गया। डिजिटल इंडिया अभियान अंतर्गत सीएससी के माध्यम से ग्राम पंचायत में उत्कृष्ट कार्य करने वाली समूह की महिलाओं को प्रशस्ति पत्र दे कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में ज्ञानेंद्र तिवारी जिला प्रबंधक फाइनेंसियल इन्क्लुसन, जिला प्रबंधक सीएससी रीवा रवि शंकर मिश्रा एवं विक्रम पाण्डेय सहित समूह की महिलाएं एवं आजीवका मिशन के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

दिव्यांशु गौतम बने विहिंप के जिला मंत्री, सुनील सिंह बने जिला अध्यक्ष

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। विश्व हिंदू परिषद महा कौशल प्रांत की दो दिवसीय प्रांत बैठक 8- 9 मार्च को जबलपुर में संपन्न हुई। इस प्रांत बैठक में महाकौशल प्रांत के विभिन्न जिलों से कई पदाधिकारी उपस्थित थे। जिसमें विशेष रूप से प्रांत अध्यक्ष सुनील भागचंदानी, प्रांत संगठन मंत्री जितेंद्र वर्मा , प्रांत मंत्री उमेश मिश्रा द्वारा ली गई । महाकौशल प्रांत की इस प्रांत बैठक में विशेष रूप से कई जिलों के पदाधिकारी द्वारा किए गए कार्य व धर्म रक्षा निधि का अवलोकन हुआ तथा आगामी कार्यक्रमों की जानकारी सभी जिलों के विश्व हिंदू परिषद के पदाधिकारीयों को दी गई ।

टीआरएस कॉलेज के समाज कार्य विभाग में किया गया राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन

'महिला सशक्तिकरण का मतलब सिर्फ आर्थिक स्वतंत्रता नहीं है, बल्कि मानसिक, सामाजिक और शारीरिक स्वतंत्रता भी है'

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा के समाज कार्य विभाग एवं आई. क्यू.ए.सी.द्वारा दिनांक 08 एवं 09 मार्च को प्राचार्य डॉ. अर्पिता अवस्थी के निर्देशन में दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी (सशक्त महिला सशक्त राष्ट्र) का आयोजन किया गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्रीमती प्रतिभा पाण्डेय, जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी तथा अध्यक्ष डॉ श्रीमती रचना श्रीवास्तव विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग, शासकीय कन्या महाविद्यालय रीवा रही। संगोष्ठी के संयोजक प्रोफ़ेसर अखिलेश शुक्ल के द्वारा माननीय अतिथि गणों का पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया। संगोष्ठी के दूसरे दिन के अकादमिक सत्रों की अध्यक्षता डॉ. महेश शुक्ल, डॉ. एस.पी शुक्ल, डॉ. संध्या शुक्ला तथा डॉ. राजेन्द्र तिवारी ने की। अकादमिक सत्र में अमन पाण्डेय, पल्लवी सिंह कर्चुली, मुस्कान पाण्डेय, विकास शुक्ला, रागिनी पाण्डेय, गौरव सोंधिया, शाहिबा खान, आरती चौधरी, सूरज मिश्रा, सुरभी गुप्ता, डॉ. राजेश त्रिपाठी प्राचार्य शास. महाविद्यालय बरही आदि ने शोध पत्रों का वाचन किया।

युवा प्रतिभागियों को युवा समाज वैज्ञानिक अवार्ड

शोध पत्रों के वाचन में सर्वोत्कृष्ट युवा प्रतिभागियों को युवा समाज को वैज्ञानिक अवार्ड से माननीय अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया। प्रथम स्थान सौरभ दुबे तथा विकास शुक्ला, द्वितीय स्थान स्वाती शुक्ला तथा तृतीय स्थान शिखा तिवारी ने अर्जित किया। सभी प्रतिभागियों ने अवार्ड विजेताओं को बधाई दी। युवा प्रतिभागियों ने राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी के विषय के अनुरूप पोस्टर का प्रस्तुतीकरण भी किया पोस्टर प्रदर्शन में प्रथम स्थान पुष्पांजलि पाण्डेय, द्वितीय स्थान साहिबा खान तथा तृतीय स्थान सुरभी शर्मा ने प्राप्त किया।

संयोजक प्रोफेसर अखिलेश शुक्ल ने संगोष्ठी के निष्कर्ष और सुझाव प्रस्तुत करते हुए कहा कि महिला सशक्तिकरण का मतलब सिर्फ आर्थिक स्वतंत्रता नहीं है, बल्कि मानसिक, सामाजिक और शारीरिक स्वतंत्रता भी है। एक सशक्त महिला अपने जीवन के हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर होती है और समाज की सकारात्मक दिशा में योगदान करती है। इस संगोष्ठी के माध्यम से जो विचार-विमर्श और शोध प्रस्तुत किए गए हैं, वे सभी समाज में महिलाओं की स्थिति को सुधारने और सशक्त बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। इन विचारों को अपनी जिंदगी में उतारकर हम एक ऐसा समाज और राष्ट्र बना सकते हैं, जो वास्तव में महिलाओं के अधिकारों का सम्मान करता हो।

मुख्य अतिथि प्रतिभा पाण्डेय ने अपने उद्बोधन में कहा कि संगोष्ठी का विषय अत्यंत सारगर्भित है। आज इस दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का समापन अवसर है, जिसका आयोजन टीआरएस कॉलेज के समाज कार्य विभाग द्वारा सशक्त महिला, सशक्त राष्ट्र के विषय पर किया गया है। यह संगोष्ठी समाज में महिलाओं की भूमिका और उनके सशक्तिकरण के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करने का एक अद्भुत अवसर रही है। हम जानते हैं कि किसी भी राष्ट्र की प्रगति में महिलाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक सशक्त महिला समाज और राष्ट्र की प्रगति की दिशा में प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करती है। जब महिलाओं को समान अवसर और समर्थन मिलता है, तो वह अपने परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। निश्चित रूप से संगोष्ठी के निष्कर्ष समाज और प्रशासन के लिए उपयोगी साबित होंगे।

समापन सत्र का सफल संचालन डॉ प्रियंका तिवारी के द्वारा किया गया। आभार प्रदर्शन करते हुए डॉ गुंजन सिंह ने कहा कि मैं इस अवसर पर सभी शोधकर्ताओं, प्राध्यापको, विद्वानों और भागीदारों का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने इस संगोष्ठी को सफल बनाने में अपना योगदान दिया। साथ ही, इस आयोजन में सहयोग देने वाले सभी लोगों को धन्यवाद देती हूँ। संगोष्ठी को सफल बनाने में प्रो. अखिलेश शुक्ला बी.बी.ए., डॉ. बृजेन्द कुशवाहा, डॉ. निशा सिंह, डॉ. प्रतिमा पाण्डेय, श्रीमती राजकुमारी पाण्डेय, शुभम सोनी, आशीष पाण्डेय, गौरव सोंधिया, अतुल पटेल, रेशू त्रिपाठी, दिनेश प्रजापति, अमन सोंधिया, अशोक कुशवाहा, राज गुप्ता, अनुराग कोल, सूरज मिश्रा, श्रद्धा द्विवेदी, शिवानी पाण्डेय, अर्पिता शुक्ला, साक्षी शुक्ला, योगेश निगम, राजकिशोर पाण्डेय, कृष्ण कुमार शुक्ला आदि ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। अन्त में सभी लोगों ने संकल्प लिया कि आइए, हम सब मिलकर एक ऐसी दिशा में काम करें, जहां प्रत्येक महिला को अपनी क्षमता को पहचानने और उसे पूरा करने का अवसर मिले, ताकि हम एक सशक्त राष्ट्र की स्थापना कर सकें।

जमीनी विवाद में युवक पर कई लोगों ने मिलकर किया प्राणघातक हमला

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। पुराने जमीनी विवाद के चलते एक युवक पर कई लोगों ने मिलकर प्राणघातक हमला कर दिया। मारपीट की इस घटना में युवक गंभीर रूप से घायल हुआ हैं, जिसे रीवा के संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना सिरमौर की बताई गई है। पुलिस ने आरोपियों के विरुद्ध हत्या के प्रयास का मामला दर्ज कर संदेहियों को पकड़कर पूछताछ शुरू कर दी है। घायल देवांश पांडे निवासी वार्ड क्रमांक 15 सिरमौर ने बताया कि शनिवार को वह ग्राम करिया दोस्त के बाबा के अंतिम संस्कार में गया था। जहां से बाइक से वापस घर जा रहा था इसी दौरान शंकर तालाब के पास नटराज कुशवाहा, जितेंद्र कुशवाहा, मुनेंद्र कुशवाहा, पंकज कुशवाहा, अतुल कुशवाहा, कुलदीप कुशवाहा एक साथ आए और सभी लोग गाली गलौज करते हुए लाठी और डंडे से हमला कर दिया। घटना की रिपोर्ट सिरमौर थाने में दर्ज कराई गई है। पुलिस द्वारा संदेह के आधार पर तीन लोगों को पूछताछ के लिए थाने लाया गया।

युवक का बाइक में स्टंट दिखाते वीडियो हुआ वायरल, पुलिस ने युवक को पकड़ा

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। एक युवक का बाइक में स्टंट दिखाते हुए वीडियो सोशल मीडिया में वायरल हुआ है। जिसे पुलिस ने संज्ञान में लिया है और युवक की पहचान कर उसके खिलाफ प्रकरण दर्ज किया है। मामला अमहिया थाने के सिविल लाइन परिसर में स्थित अटल पार्क का है। यहां पर बाइक सवार एक युवक ने स्टंट दिखाया था। वह एक पहिए पर बाइक को भीड़भाड़ वाले पार्क के समीप दौड़ा रहा था। जिस पर एसपी विवेक सिंह ने थाना प्रभारी शिवा अग्रवाल को कार्रवाई के निर्देश दिए। पुलिस ने उक्त युवक की पहचान अंगद त्रिपाठी निवासी पड़रा नई बस्ती थाना सिविल लाइन के रूप में की है। पुलिस ने युवक के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर बाइक को जप्त कर लिया है। वहीं एसपी ने सभी थाना प्रभारियों को कड़े शब्दों में निर्देश दिए हैं कि जो भी इस तरह से बाइक में स्टंट दिखाते हैं उनके खिलाफ सख्त कारवाई करें। पुलिस इसके लिए लगातार अब सोशल नेटवर्किंग साइटों में भी निगरानी कर रही है ताकि इस तरह के वीडियो वायरल होने पर तत्काल उसकी जानकारी पुलिस को मिल सके।

विश्व ग्लूकोमा सप्ताह के तहत मेडिकल कॉलेज में हुई जागरूकता मैराथन

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। विश्व ग्लूकोमा सप्ताह के तहत रीवा के श्यामशाह मेडिकल कॉलेज से जागरूकता मैराथन का आयोजन किया गया। यह मैराथन मेडिकल कॉलेज रीवा से शुरू होकर अस्पताल चौराहा होते हुए जीएमएच में समाप्त हुई। गांधी मेमोरियल अस्पताल के नेत्र रोग विभाग की एचओडी शशि मिश्रा एवं मेडिकल कॉलेज के डीन डॉक्टर सुनील अग्रवाल सहित अन्य चिकित्सक एवं एमबीबीएस के छात्र मैराथन में शामिल हुए। कार्यक्रम को लेकर बताया गया कि ग्लूकोमा आंखों की स्थितियों का एक समूह है जो ऑप्टिक तंत्रिका को नुकसान पहुंचाता है जो आंखों से मस्तिष्क तक छवियों को संचारित करता है। यह आंखों में बढ़े हुए दबाव के कारण होती है। अगर इसका इलाज ना किया जाए तो ग्लूकोमा के कारण स्थाई दृष्टिहीन हो सकती है।

सतना के भाजपा नेता लक्ष्मी यादव का खजुराहो में निधन

शादी में खाना लेते समय आया हार्ट अटैक, जलयोगी के नाम से जाने जाते थे

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। भाजपा नेता और राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व सदस्य लक्ष्मी यादव का खजुराहो में निधन हो गया। वे एक शादी समारोह में शामिल होने के लिए खजुराहो गए थे। घटना होटल क्लार्क में घटी, जहां भाजपा नेता रविन्द्र सिंह सेठी के भतीजे के रिसेप्शन का आयोजन किया गया था।

जानकारी के अनुसार, दोपहर करीब ढाई बजे लक्ष्मी यादव जब खाने की प्लेट लेने के लिए काउंटर पर पहुंचे, तभी उन्हें हार्ट अटैक आया और वे वहीं गिर पड़े। घटनास्थल पर मौजूद लोगों ने उन्हें तुरंत खजुराहो सिविल अस्पताल पहुंचाया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। लक्ष्मी यादव की पहचान एक जलयोगी के रूप में भी थी। हाल ही में उन्होंने प्रयागराज महाकुंभ में गंगा में डुबकी लगाकर जलयोग किया था, जो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया था। उनके जलयोग का लाइव प्रसारण देश के प्रमुख टीवी चैनलों पर किया गया था, जिससे उनकी लोकप्रियता और बढ़ गई थी। सतना में उनकी पहचान 'लक्ष्मी भाई' के नाम से थी। उम्र में बड़े उन्हें लक्ष्मी भाई और छोटे भाई कहकर संबोधित करते थे।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।